परमेश्वर आपसे प्रेम करता है

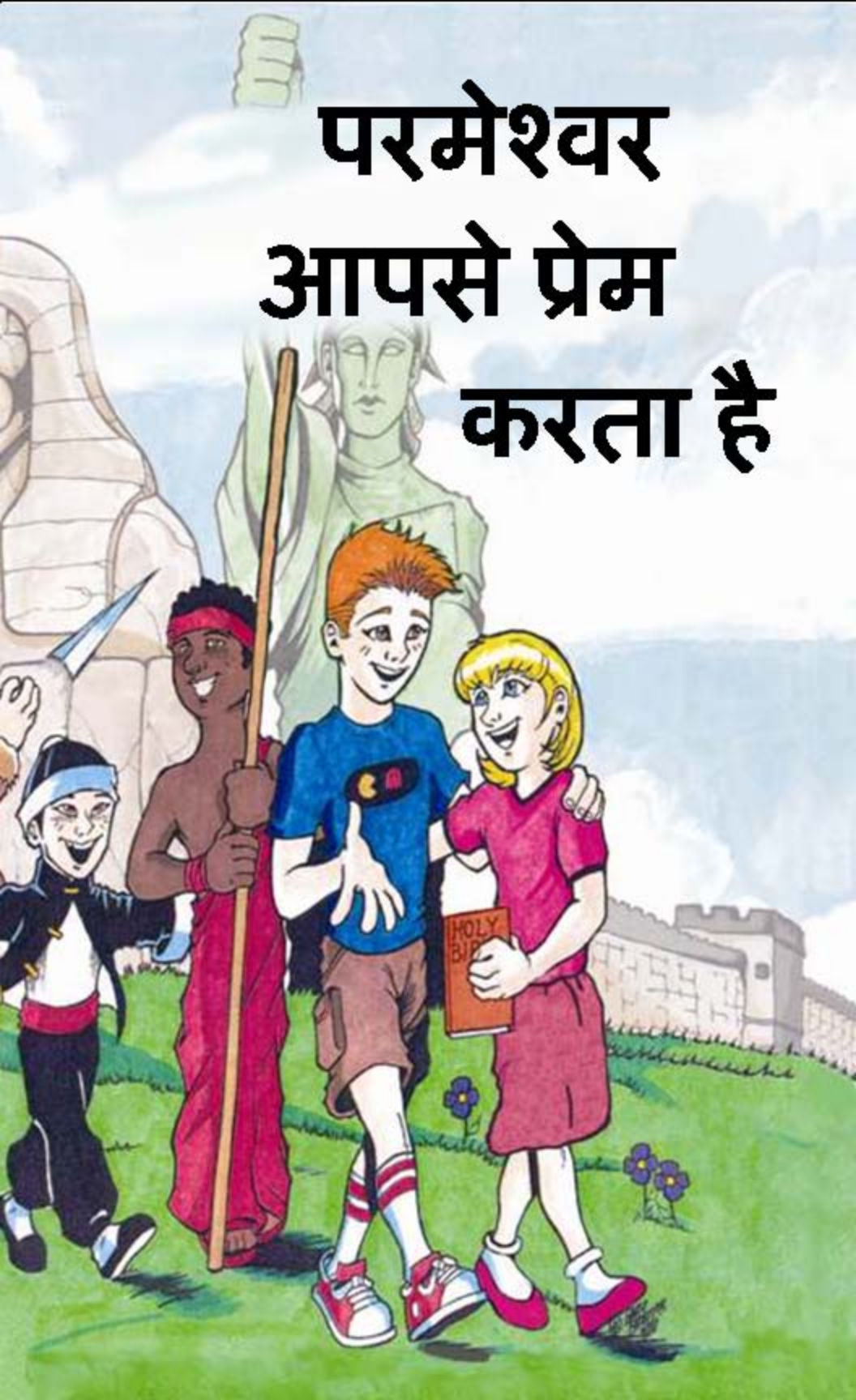

परमेश्वर आपको प्यार करता है

लेखक :
कार्मेल आर. फील्ड

प्रार्थना कविताएँ
एल. जेत्तर वॉकर

अनुवाद :
डा. विश्वास नाथ "प्रशान्त"

इन्टरनेशनल कारिस्पान्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं० 1 एन्ड्रयूज गंज
नई दिल्ली-110 049

EV6000-HN

©1992 All Rights Reserved
International Correspondence Institute

विषय सूची

पाठ		पृष्ठ
1.	परमेश्वर आपको जानता है और आपको प्यार करता है।	9
2.	आप जिस संसार में रहते हैं उसे परमेश्वर ने बनाया।	13
3.	परमेश्वर ने आपको बनाया।	17
4.	अच्छा बनने में परमेश्वर आपकी सहायता करेगा।	21
5.	आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, परमेश्वर को इसकी चिन्ता है।	25
6.	परमेश्वर आपको स्वर्ग को ले जाएगा।	29
7.	परमेश्वर आपको बचाएगा।	33
8.	परमेश्वर आपकी चिन्ता करेगा।	37
9.	परमेश्वर आपकी प्रार्थनाएँ सुनता है।	41
10.	परमेश्वर आपकी अगुवाई करेगा।	45
11.	आपको बचाने के लिए परमेश्वर ने अपना मेम्ना भेजा।	49
12.	परमेश्वर आपको क्षमा करेगा और आपकी सहायता करेगा।	53
13.	परमेश्वर आपके साथ होगा।	57
14.	आप परमेश्वर को और अच्छी तरह से जान सकते हैं।	61

प्रिय विद्यार्थी,

इन्टरनेशनल कॉरेसपोन्डेन्स् इन्स्टीट्यूट (अन्तर्राष्ट्रीय पत्र व्यावहारिक संस्था) परिवार में आपका स्वागत है! बहुत से देशों में लड़के और लड़कियाँ इन पाठों का अध्ययन कर रहे हैं। इसी प्रकार से उनके माता-पिता और बड़े भाई-बहिन भी इसका अध्ययन कर रहे हैं। क्योंकि वे सब उन महान् स्त्री और पुरुषों के बारे में पढ़ना पसन्द करते हैं, जो बहुत वर्ष पहले इसी पृथ्वी पर हुए। फिर इस पुस्तक में दी गई तस्वीरों को देखने में मनोरंजन तो होता ही है और उन बातों को करने में आनन्द मिलता है जो प्रत्येक पाठ में आपको करने के लिए कहा गया है।

आप सबको ये पाठ बहुत अच्छे लगेंगे क्योंकि इनमें आप परमेश्वर के विषय में सीखेंगे। आप जिन लोगों के बारे में पढ़ेंगे परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया था। उसने उनके लिए बहुत अच्छी अच्छी बातें कीं। आप देखेंगे कि किस प्रकार परमेश्वर आप से प्रेम करता है और आपके लिए अच्छी अच्छी बातें करता है।

ये पाठ समझने में आसान हैं। ये उन लोगों के विषय में हैं जिनके बारे में आप बाइबल में से पढ़ सकते हैं। इन पाठों में जिन बाइबल के पदों को लिया गया है वे सरल से सरल अनुवादों से चुनकर रखे गए हैं कि समझने में कठिनाई न हो।

इस पुस्तक के पीछे पृष्ठ 65 से 68 तक आपका उत्तर पृष्ठ दिया गया है

जब आप **परमेश्वर आपको प्यार करता है** पाठों के अध्ययन को पूरा करेंगे इसके बाद इसके पीछे दिया गया उत्तर पृष्ठ भर कर आई.सी.आई. में भेज दीजिए फिर आपको एक आकर्षक प्रमाणपत्र प्राप्त होगा। फिर हम आपका नामाकन आगामी पाठ्यक्रम में कर सकेंगे।

हो सकता है कि आपका पूरा परिवार ही इस अध्ययन को करना चाहता हो। यहाँ सबके लिए अर्थात् बच्चों, जवानों और बूढ़ों को करने के लिए कुछ न कुछ है।

यदि पाठ से सम्बन्धित कोई प्रश्न आपके मन में हो तो आप उसे लिखकर हमें भेज दीजिए हम उत्तर देकर सहायता करने के लिए खुश होंगे।

आपको धन्यवाद,

आपका शुभचिन्तक

संचालक

पाठ–1

परमेश्वर आपको जानता है और आपको प्यार करता है

परमेश्वर के बारे में यह सीखिए :

परमेश्वर के पास एक पुस्तक है जिसे बाइबल या पवित्र बाइबल कहा जाता है।
परमेश्वर बाइबल में स्वयं के विषय में सत्य बातें बताता है।
परमेश्वर सदा से है और सदाकाल तक रहेगा।
परमेश्वर कुछ भी कर सकता है। उसी ने समस्त संसार को बनाया।
परमेश्वर हर जगह है और वह सब कुछ जानता है।
परमेश्वर ने आपको बनाया। वह आपको जानता है और आपसे प्रेम करता है।
परमेश्वर भला (अच्छा) है। जब आप उसे जानते हैं तो उससे प्रेम करते हैं।

ये शब्द बाइबल में से हैं इन्हें पांच बार जोर ज़ोर से पढ़िए
"परमेश्वर प्रेम है। हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया।"
यूहन्ना 4:16, 19.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

1. हम क्यों परमेश्वर से प्रेम करते हैं?
   क्योंकि प.....उसने हम से.....किया।

2. कौन सी पुस्तक परमेश्वर के बारे में सत्य बातें बताती है?
   प.....बा.....

सही उत्तर ये हैं :
1. पहिले, प्रेम 2. पवित्र बाइबल
क्या आपने इन्हीं शब्दों को रिक्त स्थान में लिखा था?

बाइबल आपको बताती है कि परमेश्वर किसके समान है।

* इस चिन्ह से आरम्भ व इसी * चिन्ह से अन्त होने वाले प्रत्येक शब्दों के नीचे रेखा खींच दें।

*** परमेश्वर सदा से है और सदाकाल तक रहेगा। ***

संसार (जगत) की सृष्टि से पहिले,
आकाशमण्डल और बादलों से पूर्व,
* सूर्य, चन्द्रमा और तारागणों से पूर्व परमेश्वर था। *

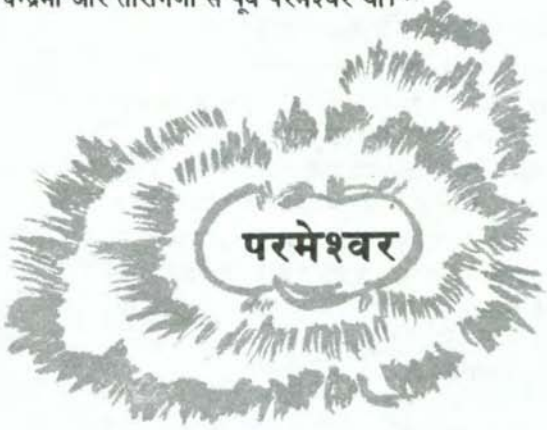

परमेश्वर सब कुछ कर सकता है
परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की

परमेश्वर ने चट्टानों और पर्वतों को बनाया।
परमेश्वर ने झील और नदियाँ बनायीं।
परमेश्वर ने वृक्ष और फूल बनाए।
परमेश्वर ने जानवरों और मनुष्यों को बनाया
परमेश्वर ने आपको बनाया।

बाइबल आपको बताती है कि परमेश्वर हर जगह है।

जैसे कि आप हवा में सांस लेते हैं उसी
प्रकार परमेश्वर आपके चहुं ओर है।
आप हवा को देख नहीं सकते।
आप परमेश्वर को नहीं देख सकते।
परन्तु परमेश्वर आपको देख सकता है।
परमेश्वर आपकी सुन सकता है।
परमेश्वर आपसे बात कर सकता है।
परमेश्वर आपको जानता है और
आपको प्यार करता है।

बाइबल आपको बताती है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है।

आप जो कुछ भी करते हैं वह सब परमेश्वर देखता है।
आप जो कुछ भी बोलते हैं वह सब परमेश्वर सुनता है।
*आप जो कुछ भी सोचते हैं और महसूस करते हैं वह सब
परमेश्वर जानता है।* आपके लिए सबसे उत्तम क्या है यह परमेश्वर
जानता है। परमेश्वर प्रत्येक वस्तु की सच्चाई को जानता है।
परमेश्वर बाइबल में आपको सत्य बातें बताता है।

**जैसा उसने आपको
बनाया उसी रूप में
परमेश्वर आपसे प्यार करता है।**

कुछ लोगों के चकत्ते (दाग) हैं। कुछ लोगों के घुंघराले
कुछ लोग नाटे और मोटे हैं। बाल हैं। कुछ लोगों के सीधे बाल हैं।
कुछ लोग लम्बे और दुबले हैं।
इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।
आप जैसे भी हैं परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।
नीचे दिये गए रिक्त स्थान में अपना नाम लिखें।
.....को परमेश्वर प्यार करता है।

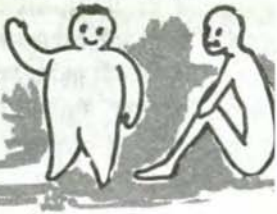

बाइबल आपको बताती है कि परमेश्वर भला (अच्छा) है।

परमेश्वर आपकी सहायता करना चाहता है। परमेश्वर आपको अच्छा और प्रसन्न बनाना चाहता है। परमेश्वर आपको बुद्धिमान और शक्तिशाली बनाना चाहता है। परमेश्वर आपको भला और सहायता करने वाला बनाना चाहता है।

जब आप परमेश्वर को जानते हैं तो उसे प्यार करते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि जैसे वह आप से प्रेम करता है वैसे ही आप भी उससे प्रेम करें। निम्न शिक्षाएँ परमेश्वर को जानने और उससे प्रेम करने में आपकी सहायता करेंगी।

क्या आप परमेश्वर को जानना चाहते हैं?
क्या आप अच्छे और प्रसन्न बनना चाहते हैं?
क्या आप बुद्धिमान और ताकतवर बनना चाहते हैं?
क्या आप भले और सहायता करने वाले बनना चाहते हैं?

आप परमेश्वर से बातचीत कर सकते हैं।
परमेश्वर वहीं जहाँ आप हैं आपके साथ होगा और आपकी सुनेगा।
परमेश्वर से बातचीत करना प्रार्थना है।
इस प्रार्थना को याद करें और परमेश्वर से कहें (करें):

प्रार्थना

परमेश्वर, मैं आपको जानना चाहता हूँ
और जैसे आप मुझे प्यार करते हैं
मैं भी आपको प्यार करता हूँ।
इसीलिए इन शिक्षाओं (पाठों) को सीखने में कृपा करके मेरी सहायता करें।
और मुझे जैसा होना चाहिए उसी तरह का बनाएँ।'

पाठ-2

आप जिस संसार में रहते हैं उसे परमेश्वर ने बनाया

परमेश्वर के बारे में यह सीखिए :

परमेश्वर वह कर सकता है जो अन्य कोई नहीं कर सकता।
परमेश्वर सृष्टि कर सकता है—न कुछ में से कुछ बना सकता है।
परमेश्वर ने जगत (संसार) की सृष्टि छै दिन में की।
परमेश्वर ने आपके रहने के लिए एक अच्छे संसार की रचना की।
परमेश्वर ने छै दिन काम करने के लिए और एक दिन विश्राम के लिए बनाया।
परमेश्वर उत्पत्ति नामक पुस्तक में बताता है कि कैसे उसने संसार की सृष्टि की।
परमेश्वर की पुस्तक—बाइबल में उत्पत्ति नामक पुस्तक पहिले भाग में है।

अपनी बाइबल में से नीचे लिखे पद को पांच बार ज़ोर ज़ोर से पढ़ें:

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" उत्पत्ति 1:1.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

नीचे दिये गए उत्तर में जो अक्षर नहीं हैं उन्हें लिखें।

1. जो अन्य कोई नहीं कर सकता क्या वह परमेश्वर कर सकता है ?
   परमेश्वर सृ.....कर सकता है, न कुछ में से कुछ बना सकता है।

2. परमेश्वर किस जगह बताता है कि उसने ससार की सृष्टि की ?
   बा.....के पहिले भाग में उ.....नामक पुस्तक में।

उत्तर

1. सटि 2. बाइबल, उत्पत्ति

परमेश्वर ने जगत (संसार) की सृष्टि छै दिन में की।

परमेश्वर ने लोगों के रहने के लिए एक अति सुन्दर जगत की योजना बनाई। आरम्भ में पृथ्वी का कोई आकार नहीं था।
पृथ्वी अन्धकारपूर्ण रात्रि के समान सूनसान और अन्धकार पूर्ण थी।
तब परमेश्वर ने कहा और पृथ्वी ने एक नया रूप ले लिया।
परमेश्वर ने कहा और प्रकाश हो गया।
जितनी बार परमेश्वर ने कहा, और कुछ न कुछ की सृष्टि हुई।

कल्पना करें कि आप परमेश्वर को संसार की सृष्टि (सृजन) करते हुए देख रहे हैं। *इस चिन्ह वाले प्रत्येक शब्दों के नीचे आरम्भ से *चिन्ह के अन्त तक रेखा खींचें। ये सब शब्द बाइबल के पहिले भाग में से उत्पत्ति नामक पुस्तक में से लिए गए हैं।

पहले दिन

*परमेश्वर ने कहा, "प्रकाश हो।"

परमेश्वर ने दिन और रात्रि को बनाया।

दूसरे दिन

परमेश्वर ने कहा, "जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी बन जाए।"

परमेश्वर ने जल से आकाश को अलग किया।

तीसरे दिन

परमश्वर ने कहा, "आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और समुद्र बन जाए।"

परमेश्वर ने सूखी भूमि, समुद्र, वृक्ष, फूल बनाए

चौथे दिन

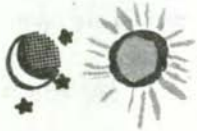

परमेश्वर ने कहा, "दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों।"

परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा और तारागणों को बनाया

पाचवें दिन

परमेश्वर ने कहा, "जल जीवित मछलियों (जल जन्तुओं) से बहुत ही भर जाए और आकाश में बहुत सारे पक्षी हो जाएँ।"

परमेश्वर ने समस्त मछलियों और पक्षियों को बनाया।

छठवें दिन

परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से प्रत्येक जाति के जानवर, पशु और रेंगनेवाले जन्तु उत्पन्न हों।"

परमेश्वर ने हर प्रकार के सब जानवरों को बनाया

परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।"

परमेश्वर ने प्रथम पुरुष और स्त्री को बनाया।

परमेश्वर ने आपके रहने के लिए एक सुन्दर जगत को बनाया।

तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा।
सब कुछ बहुत ही अच्छा था। जगत बहुत ही सुन्दर था।
परमेश्वर बहुत ही प्रसन्न था।

परमेश्वर ने छै दिन काम करने के लिए और एक दिन विश्राम के लिए बनाया।

सातवें दिन परमेश्वर ने विश्राम किया।
उसने सातवें दिन को विश्राम का दिन बनाया।
परमेश्वर ने विश्राम का दिन हमारे लिए बनाया।

सप्ताह में छै दिन हम काम करते हैं।
सातवें दिन हम विश्राम करते हैं।
विश्राम के दिन हम परमेश्वर के घर को जाते हैं।
क्या आप परमेश्वर के घर को जाते हैं?

परमेश्वर के घर में हम परमेश्वर से बातचीत करते हैं और उसके बारे में सीखते हैं। हम अपने घर में भी जब प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर से बातचीत करते हैं।

क्या आप प्रसन्न हैं कि परमेश्वर ने इस सुन्दर जगत को बनाया?
क्या आपने स्वयं के बनाए जाने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया है?
नीचे लिखी प्रार्थना को सीखें और परमेश्वर से कहें (करें):

प्रार्थना

समस्त संसार के लिए हे परमेश्वर मैं आपको
धन्यवाद देता हूँ,
जो कुछ मैं देखता हूँ उन सब को बनाने के लिए,
काम करने के दिनों और विश्राम के दिन के लिए,
और मुझे बनाने के लिए, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

पाठ-3

परमेश्वर ने आपको बनाया

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर ने प्रथम पुरुष और स्त्री को अपने स्वरूप में बनाया
परमेश्वर चाहता था कि वे उनकी सन्तान बने रहें।
परमेश्वर अपनी सन्तान से प्रेम करता है और उनकी चिन्ता करता है।
परमेश्वर ने आपको भी बनाया और चाहता है कि आप उसकी सन्तान (पुत्र/पुत्री) बनें। परमेश्वर जो आपसे चाहता है उसको करने में आप प्रसन्न होंगे।

नीचे लिखे पद को बाइबल से पढ़ें। इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"यहोवा परमेश्वर ने आदम को (मनुष्य के शरीर को) भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूक दिया, और आदम (मनुष्य) जीवता प्राणी बन गया।" उत्पत्ति 2:7.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

नीचे दिए गए उत्तर में जो अक्षर नहीं हैं उन्हें लिखें।

1. प्रथम पुरुष (आदम) को बनाने में परमेश्वर किस वस्तु को प्रयोग में लाया ?
   भू.....की मि.....

2. परमेश्वर आपसे क्या बनने की अपेक्षा करता है ?
   उसकी स.....

उत्तर

1. भूमि मिट्टी 2. सन्तान

परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया
*चिन्ह से आरम्भ होने व इसी चिन्ह से अन्त होने वाले शब्दों के नीचे रेखा खींच दें। * परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा।
परमेश्वर ने अपने जीवन का श्वास उसके नथनों में फूंक दिया।
परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य का नाम आदम रखा।
आदम बहुत सी बातों में परमेश्वर की समानता में था।

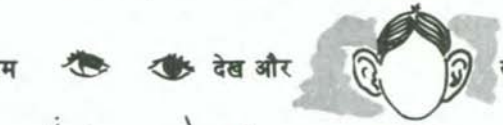

आदम सोच और महसूस कर सकता था।
जैसा परमेश्वर ने आदम से प्रेम किया, वैसे ही वह भी परमेश्वर से प्रेम कर सकता था। *आदम परमेश्वर की सन्तान था।*

परमेश्वर ने आदम से प्रेम किया और उसकी सुधि ली।

परमेश्वर ने आदम के रहने के लिए एक अतिसुन्दर बाग बनाया।
उसने उस बाग को अदन की वाटिका कहा।
उस वाटिका में छायादार वृक्ष और चमकीले सुन्दर फूल थे। हरे घास के मैदान, कलकल करती नदियाँ थीं।
सुन्दर पक्षी और मित्र जानवर थे।
वहाँ खाने के लिए स्वादिष्ट फल थे।
जो कुछ परमेश्वर ने बनाया था वह सब बहुत अच्छा था।

आदम एक सुन्दर और सब सुविधाओं से पूर्ण संसार में रहता था।

परमेश्वर ने करने के लिए काम दिया था।
परमेश्वर ने उसे उसके हाथों से करने के
लिए काम दिया था।
आदम सुन्दर वाटिका की देख-भाल करता था।
परमेश्वर ने आदम को दिमाग से करने के लिए काम दिया था।
आदम ने सभी जानवरों और पक्षियों का नाम रखा।
परमेश्वर ने आदम को ठीक से काम करने में उसकी सहायता की।
*परमेश्वर ने जो कुछ आदम से करने के लिए कहा था वह उन
सब कामों को करने में प्रसन्न था।* आदम परमेश्वर को
प्रसन्न करना चाहता था और उसने किया भी।

प्रतिदिन परमेश्वर वाटिका में आया।
परमेश्वर और आदम ने
एक दूसरे से बातचीत की।
परमेश्वर और आदम आपस में
प्रेम करते थे। आदम ने
मित्रता प्रेमी जानवरों को पसन्द किया।
आदम ने सुन्दर पक्षियों को पसन्द किया।
आदम ने परमेश्वर से बातचीत करना
पसन्द किया। परन्तु आदम को
किसी चीज़ की आवश्यकता थी।
परमेश्वर जानता था कि आदम को क्या चाहिए।
*परमेश्वर अपने बच्चों (सन्तान) की प्रत्येक आवश्यकताओं
को हर समय जानता है।*

परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में सुला दिया।
परमेश्वर ने आदम की पसलियों में से एक
पसली निकाली। उस पसली से
परमेश्वर ने स्त्री को बनाया। कि वह
आदम की सहायता करे और उसे प्रसन्न रखे।
परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद से जगाया।
और उस स्त्री को उसे दिखाया।
परमेश्वर ने जो स्त्री उसे दी थी
आदम ने उससे प्रेम किया।

आदम ने उसका नाम हव्वा रखा। हव्वा आदम की पत्नी बन गई।
आदम और हव्वा इस संसार में प्रथम मनुष्य प्राणी थे।
अदन की वाटिका मे आदम और हव्वा एक साथ प्रसन्न थे।
उन्हें अपने सुन्दर घर से प्यार था। उन्होंने एक दूसरे को प्यार किया।
उन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया।
आदम और हव्वा एक साथ परमेश्वर की संगति में चलने और परमेश्वर से बातचीत करने लगे।

परमेश्वर ने आपको बनाया है और यह चाहता है कि आप उसके बच्चे बनें।

परमेश्वर ने आपको पूरा मनुष्य नहीं बनाया जैसा कि उसने आदम को बनाया था। परमेश्वर ने पहिले आपको एक छोटा बच्चा बनाया।
उसने आपको पिता और माँ दिए कि वे आपका पालन-पोषण करें।
परमेश्वर ने जितना अधिक प्रेम आदम से किया, उतना ही अधिक आपसे भी किया। परमेश्वर आपका भी पिता बनना चाहता है।

परमेश्वर चाहता है कि आप प्रसन्न रहें।

आपके पास भी हाथ और दिमाग काम करने के लिए हैं।
अपना कार्य अच्छी तरह से करने का प्रयत्न करें।
आदम के समान आप भी परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करें।
जो कुछ परमेश्वर आपसे चाहता है उसको करने में आप प्रसन्न होंगे।
क्या आप चाहते हैं कि आपके कार्य में परमेश्वर आपकी सहायता करे।
नीचे लिखी प्रार्थना को याद कर लें और प्रतिदिन प्रातः परमेश्वर से कहें (करें):

प्रार्थना

हे परमेश्वर, कार्य और खेलने के लिए तेरा धन्यवाद हो।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे कार्य में सहातया करें।
मेरी सहायता करें कि मैं आज जो कुछ भी करता और जो कुछ भी कहता हूँ उन सब में आपको प्रसन्न करूँ।

पाठ-4

अच्छा बनने में परमेश्वर आपकी सहायता करेगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

जो ठीक है उसको करने में परमेश्वर अपने बच्चों को सिखाता है।
परमेश्वर का शत्रु कोशिश करता है कि लोग पाप करें।
पाप ने आदम और हव्वा को परमेश्वर से अलग कर दिया।
जिन्होंने ग़लत काम किया है परमेश्वर उनको अभी भी प्यार करता है।
परमेश्वर बाइबल में बताता है कि आपको क्या करना है।

इस पद को अपनी बाइबल में से पांच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम (मनुष्य) को आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना; क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" उत्पत्ति 2:16, 17.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

सही उत्तर वाले शब्द पर गोला बना दें, जैसा प्रश्न 1 में दिखाया गया है :

1. परमेश्वर क्या चाहता है कि उसके बच्चे कैसे बनें ? **अच्छे** **बुरे** ?
2. आदम को परमेश्वर से किसने अलग किया ? **प्रेम** **पाप**
3. क्या परमेश्वर अभी भी उन्हें प्यार करता है जो ग़लत काम करते हैं ? **हाँ** **नहीं**

उत्तर

1. अच्छे 2. पाप 3. हाँ

आपके सीखने के लिए शब्द

पाप का अर्थ है परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन या ग़लत काम करना।
पाप : वे बुरी बातें जो एक व्यक्ति करता या कहता है।
बुराई : का अर्थ है बुरा।
शैतान : परमेश्वर का शत्रु है जो लोगों को पाप करने के लिए उभारता है।
शैतान : इबलीस् का दूसरा नाम है।

परमेश्वर अपने बच्चों (सन्तानों) को सिखाता है कि जो सही (ठीक है) वही करें।

चिन्ह से आरम्भ व अन्त होनेवाले शब्दों के नीचे रेखा खींच दें

आदम और हव्वा एक पूर्ण और पाप-रहित संसार में रहते थे।
वह सब जो परमेश्वर ने बनाया था बहुत अच्छा था।
आदम और हव्वा भी अच्छे थे। परमेश्वर ने उन्हें अपनी समानता में अच्छा बनाया था।

आदम और हव्वा को क्या-क्या करना था वह परमेश्वर ने उन्हें बताया था। परमेश्वर ने उन्हें यह भी बताया था कि उन्हें क्या नहीं करना चाहिए।

परमेश्वर ने उनसे कहा था कि एक विशेष वृक्ष के फल को मत खाना।

उसने उन्हें चेतावनी भी दी थी कि यदि वे उसको खाएंगे तो मर जायेंगे।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से प्रेम किया।
वह उनसे चाहता था कि वे ठीक से रहें और उसकी आज्ञा मानें।
परमेश्वर नहीं चाहता था कि वे मर जाएँ।

परमेश्वर का शत्रु लोगों को पाप करने के लिए उभारता है।

परमेश्वर का एक शत्रु है उसका नाम शैतान या इवलीस् है। परमेश्वर अच्छा है परन्तु शैतान बुरा है। परमेश्वर लोगों की सहायता करता है कि वे अच्छे (भले) बनें और जो ठीक (सही) है वही करें। शैतान कोशिश करता है कि लोग बुरे काम करें।

एक दिन शैतान अदन की वाटिका में आया। शैतान ने हव्वा से बात करने के लिए अपने लिए सर्प का प्रयोग किया। सर्प ने हव्वा को वह फल दिखाया जिसे परमेश्वर ने खाने के लिए मना किया था। शैतान ने हव्वा से झूठ बोला। शैतान ने कहा, "इस फल को खा लो और तुम निश्चय न मरोगे। तुम परमेश्वर के तुल्य बुद्धिमान हो जाओगे।

हव्वा जानती थी कि उसे परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। परन्तु उसने शैतान के झूठ सुनने पर ध्यान लगाया। हव्वा ने उस फल में से तोड़कर कुछ खाया जिसे परमेश्वर ने खाने से मना किया था। परमेश्वर ने उनसे कहा था, इनमें से न खाना। हव्वा ने कुछ आदम को दिया और उसने भी खाया। आदम और हव्वा दोनों ने पाप किया। तब कुछ भयानक घटित हुआ।

पाप ने आदम और हव्वा को परमेश्वर से अलग कर दिया।

आदम और हव्वा जो हमेशा से परमेश्वर से प्रेम करते थे अब तो वे उससे भयभीत थे। वे जानते थे कि उन्होंने ग़लत काम किया है। उन्होंने अपने आपको परमेश्वर से छिपाने का प्रयत्न किया। वे तो नंगे और लज्जित (शर्मिन्दा) थे। उन्होंने पत्तों से अपना नंगापन ढांपा। परन्तु पत्तों के वस्त्र अच्छे नहीं थे।

परमेश्वर उन्हें अभी भी प्यार करता है जिन्होंने ग़लत काम किए हैं।

कोई भी अपने आपको परमेश्वर से छिपा नहीं सकता। आदम और हव्वा ने जो कुछ किया था उसे परमेश्वर ने देखा परन्तु परमेश्वर ने तब भी उन से प्यार किया। उसने उनके लिए जानवर की खाल के कपड़े (वस्त्र) बनाए।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से उनके पाप के विषय में बात की। ग़लत काम करने—आज्ञा तोड़ने के कारण परमेश्वर ने उन्हें दण्ड तो देना था। परमेश्वर ने दण्ड दिया और सिखाया कि वे सही काम करें। उन्हें अपनी सुन्दर अदन की वाटिका छोड़नी पड़ी जो उनका घर था। उनका पाप संसार में बीमारी और मृत्यु लाया। परन्तु परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि एक उद्धारकर्ता आएगा। वह उद्धारकर्ता सब कुछ फिर से ठीक कर देगा।

परमेश्वर बाइबल में बताता है कि क्या करना चाहिए।

परमेश्वर आपको बताता है कि क्या ग़लत है और क्या ठीक है। क्या आपने वे बातें की हैं जिन्हें आप जानते थे कि ग़लत हैं? परमेश्वर आपसे अभी भी प्यार करता है और वह आपकी सहायता करना चाहता है। परमेश्वर से कहें कि मैंने ग़लती की है, मुझे क्षमा करें। उस से बचने के लिए सहायता माँगे। तब वही करें जो परमेश्वर आपसे करने के लिए कहता है। और तब आप प्रसन्न होंगे। बिस्तर पर जाने से पहले परमेश्वर से यह प्रार्थना करें:

प्रार्थना

हे परमेश्वर मैं क्षमा चाहता हूँ क्योंकि मैंने हर समय अच्छा करने की जगह बुरे काम किए हैं।
कृपया मुझे वह सब करने में सहायता करें जो आप मुझसे चाहते हैं कि मैं करूं। अब इस रात में मेरी रक्षा करें।

पाठ-5

आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं परमेश्वर को इसकी चिन्ता है

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर माता-पिता की सहायता करता है कि वे अपने बच्चों की चिन्ता करें। परमेश्वर जानता है कि आपके मन में दूसरों के प्रति क्या विचार हैं। परमेश्वर उनको दण्ड देता है जो दूसरों को गलत मार्ग पर ले जाते हैं वे ग़लत काम करवाते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि आप दूसरों के साथ भलाई करें।

बाइबल में से यह पढ़ें इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढें :

"तब कैन न अपने भाई हाबिल से कुछ कहा,..... और उसे घात किया तब यहोवा ने कैन से पूछा, तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" उत्पत्ति 4:8, 9.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

सही उत्तर वाले शब्द पर गोला बना दें।

1. जो दूसरों के साथ बुरा करते हैं परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा ? — क्षमा करेगा आशीष देगा दण्ड देगा
2. जब आप दूसरों पर क्रोधित होते हैं तो क्या परमेश्वर जानता है। — हाँ, नहीं कभी-कभी
3. किसने अपने भाई की हत्या की थी ? — आदम, हाबिल, कैन

उत्तर

1. दण्ड देगा 2. हाँ 3. कैन

एक भेंट चढ़ाना वह है जो लोग परमेश्वर के लिए देते हैं। बलिदान जीवित होता है। जो परमेश्वर के लिए भेंट स्वरूप चढ़ाया (बलि किया) जाता है।

आशीष देना किसी व्यक्ति के लिए (भलाई) करना है।

परमेश्वर माता-पिता की सहायता करता है कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण करें।

चिन्ह से आरम्भ व इसी चिन्ह से अन्त होने वाले शब्दों के नीचे रेखा खींच दें

आदम और हव्वा के बहुत से बच्चे हुए। उनका पहला पत्र कैन था। उनका दूसरा पुत्र हाबिल था। कैन और हाबिल उनके पहिले बच्चे हुए जो संसार में प्रथम भाई थे। अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए आदम और हव्वा को कठिन परिश्रम करना पडता था। परमेश्वर ने उनके काम में उनकी सहायता की।

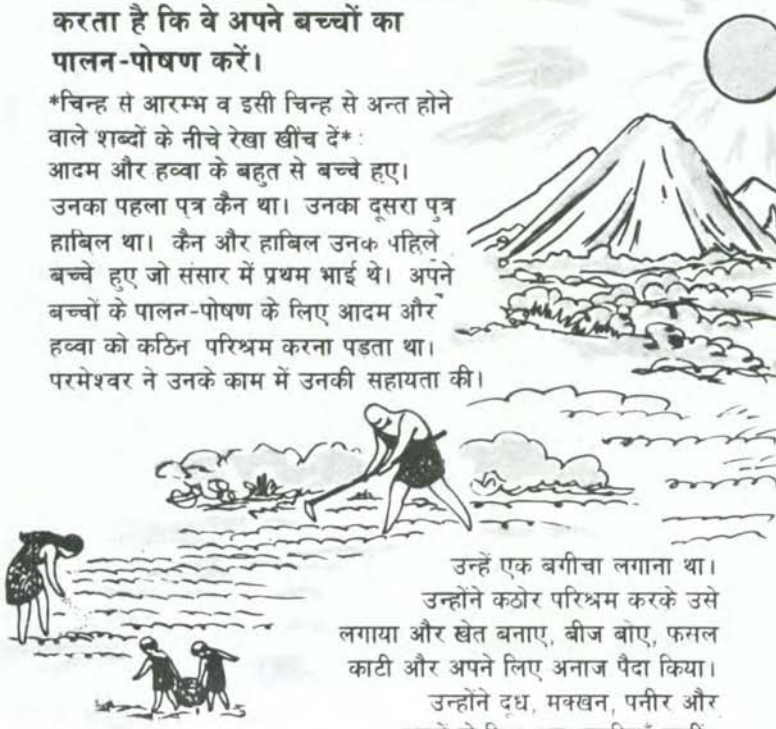

उन्हें एक बगीचा लगाना था। उन्होंने कठोर परिश्रम करके उसे लगाया और खेत बनाए, बीज बोए, फसल काटी और अपने लिए अनाज पैदा किया। उन्होंने दूध, मक्खन, पनीर और वस्त्रों के लिए भेड-बकरियाँ पालीं। उन्होंने अपने सब बच्चों को काम करना सिखाया। और उन्होंने उनको परमेश्वर के बारे में सिखाया।

आप दूसरों के बारे में क्या सोचते हैं यह परमेश्वर जानता है।

कैन ने जो अनाज पैदा किया था वह उसकी भेंट परमेश्वर के लिए ले आया। हाबिल ने भी परमेश्वर के लिए भेंट चढ़ाई उसने एक भेड़ का बच्चा (मेम्ना) दिया जो हाबिल के पापों के लिए मरे।

*परमेश्वर ने कैन और हाबिल दोनों से प्रेम किया। * परमेश्वर ने उनको अपने पास आने का मार्ग भी बताया। उनको अपने पाप के लिए बलिदान लाना था, ठीक जैसा कि हाबिल ने किया। परमेश्वर ने हाबिल को आशीष दी और उसके पापों को क्षमा किया।

कैन परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार न था। कैन तो अपने ढंग से सब कुछ करना चाहता था। वह हाबिल को आशीष दिये जाने के कारण परमेश्वर पर क्रोधित था। परमेश्वर जानता था कि कैन के मन में क्या है। *परमेश्वर जानता था कि यदि कैन इसी प्रकार क्रोधित रहा तो वह कुछ न कुछ बुरा काम अवश्य करेगा। * परमेश्वर ने कैन से बातें कीं और उससे पूछा, "तू क्यों क्रोधित है?" परन्तु कैन ने परमेश्वर की न सुनी। कैन ने अपने भाई हाबिल से घृणा की।

जो दूसरों का बुरा करते हैं परमेश्वर उनको दण्ड देता है।

एक दिन दूर खेतों में कैन ने अपने भाई की हत्या कर दी। यह एक भयानक पाप था। जो कुछ कैन ने किया था उसे परमेश्वर ने देखा था।

परमेश्वर को कैन को दण्ड देना आवश्यक था।
परमेश्वर ने कैन को उसके घरवालों के साथ रहने न दिया।
कैन और उसकी पत्नी भगोड़े बन गए और उन्हें अपने घर से जाना पड़ा कि अन्य देश में जाकर रहें।

परमेश्वर चाहता है कि आप दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करें।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करके हमें अच्छा बनाना चाहता है।
परमेश्वर हमारे अन्दर से बुरी भावनाओं को निकालना चाहता है और दूसरों से प्रेम करने के लिए हमारे अन्दर अपना प्रेम भरना चाहता है।
तब हम हमेशा प्रसन्न रहेंगे।
क्या कभी आप दूसरों पर क्रोधित हो जाते हैं?
क्या आप अपने अन्दर से क्रोध की भावना को निकालने के लिए परमेश्वर से कहते हैं ?
क्या आप दूसरों के साथ भलाई करने वाले बनना चाहते हैं?
नीचे दी गई प्रार्थना करें :

प्रार्थना

हे प्रभु, ऐसा होने दे कि मैं कैन के समान न बनूँ।
मुझे दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए उसे सीखने में मेरी सहायता कर।
मेरे क्रोधपूर्ण विचारों और कार्यों को क्षमा कर।
और मुझे प्रेम करने वाला, नम्र और अच्छा बनाएँ।

पाठ-6

परमेश्वर आपको स्वर्ग को ले जाएगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर ने हनोक को बिना मरे (जीवित) ही स्वर्ग पर उठा लिया। स्वर्ग में परमेश्वर के पास आपके लिए अति सुन्दर स्थान (घर) है। परमेश्वर के साथ-साथ चलें। वह आपको स्वर्ग को ले जायेगा।

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें

इसे पांच बार जोर-ज़ोर से पढ़ें:

"हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था फिर वह लोप हो गया। क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।" उत्पत्ति 5:24 मैंने.....स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ देखा और मैंने यह वाणी सुनी....."यहाँ ऊपर आ जा।" प्रकाशित वाक्य 4:1.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

1. परमेश्वर	*	* परमेश्वर का अति सुन्दर घर है।
2. हनोक	*	* परमेश्वर चाहता है कि आप उसके साथ-साथ चलें।
3. स्वर्ग	*	* परमेश्वर के साथ चल सकते और स्वर्ग को जा सकते हैं।
4. आप	*	* बिना मरे जीवित ही स्वर्ग पर उठा लिया गया।

परन्तु हनोक ने परमेश्वर से प्रेम किया। हनोक ठीक हाबिल की तरह परमेश्वर के पास आया। वह एक मेम्ना लेकर आया जो उसके पापों के लिए मारा जाए। हनोक ने भी बुरे काम किये थे परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। परमेश्वर ने हनोक के पापों को दूर कर दिया और उसे एक भला (अच्छा) व्यक्ति बना दिया।

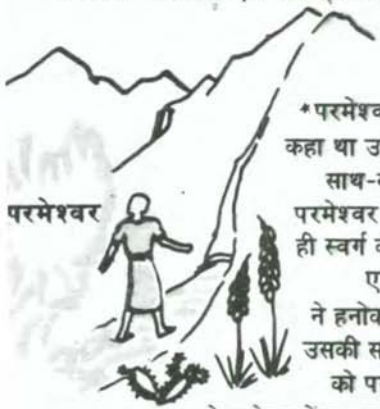

हनोक प्रतिदिन प्रार्थना करते हुए परमेश्वर से बातचीत करता था। *परमेश्वर ने जो कुछ हनोक को करने के लिए कहा था उसे करते हुए वह प्रतिदिन परमेश्वर के साथ-साथ चला करता था।* जब वह नित्य परमेश्वर के साथ चलता था तो हनोक निश्चय ही स्वर्ग के मार्ग पर था। परमेश्वर और हनोक एक दूसरे को प्यार करते थे। परमेश्वर ने हनोक को सामर्थ दी कि वह उसके कार्य में उसकी सहायता करे। हनोक ने अपने पड़ौसियों को परमेश्वर के बारे में बताया। परमेश्वर ने हनोक को बताया था कि उसे क्या कहना है। हनोक ने प्रयत्न किया कि दूसरे लोग भी परमेश्वर की सगति में आ जाएँ। उनमें से बहुतों ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वे तो कैन के समान भयंकर पापी थे।

वे लोग जो परमेश्वर के साथ चलते हैं, जब वे मर जाते हैं तो स्वर्ग में जाते हैं। परन्तु परमेश्वर ने हनोक को मरे बिना जीवित ही स्वर्ग पर उठा लिया। परमेश्वर हनोक को अपने साथ अपने अति सुन्दर और भव्य घर को ले गया। जहाँ हर एक चीज़ सिद्ध और पवित्र है। और वहाँ हर कोई प्रसन्न है।

उत्तर

परमेश्वर	परमेश्वर का अति सुन्दर घर है।
हनोक	परमेश्वर चाहता है कि आप उसके साथ-साथ चलें।
स्वर्ग	परमेश्वर के साथ चल सकते और स्वर्ग को जा सकते हैं।
आप	बिना मरे जीवित ही स्वर्ग पर उठा लिया गया।

परमेश्वर ने हनोक को बिना मरे (जीवित) ही स्वर्ग पर उठा लिया।

*इस चिन्ह के सभी शब्दों को रेखांकित करें : आदम के बहुत से पुत्र और पुत्रियाँ थीं। और उनके भी बहुत से पुत्र और पुत्रियाँ थीं। बहुत अधिक लोग दुनिया में थे। *परमेश्वर ने सब लोगों से प्रेम किया। * परमेश्वर चाहता था कि वे उसके साथ-साथ चलें और वह भी उनके साथ।

परमेश्वर उनको स्वर्ग में ले जाना चाहता था। परन्तु बहुत से लोगों ने परमेश्वर से प्रेम नहीं किया। न तो उन्होंने प्रार्थनाएँ कीं और न ही परमेश्वर के साथ-साथ चले ही। वे तो सब कैन के समान थे। उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार अपने रास्ते चुन लिए। उन्होंने वह नहीं किया जो परमेश्वर ने उनसे करने को कहा था वे परमेश्वर के साथ-साथ नहीं चले। *उनके पापो ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया। *

स्वर्ग में परमेश्वर के पास आपके लिए एक अति सुन्दर घर है
वहाँ ऐसी कोई चीज नहीं जो आपका दिल दुखाए
वहाँ आप सदाकाल तक पूर्ण स्वस्थ और प्रसन्न व आनन्दित रहेंगे।
वहाँ न तो आप बीमार होंगे, न ही आपको भूख लगेगी और न ठण्ड।
स्वर्ग में प्रत्येक को सब कुछ मिलेगा
स्वर्ग में आपके बहुत सारे अच्छे-अच्छे मित्र होंगे
इन सबसे श्रेष्ठ बात कि वहाँ आप परमेश्वर के साथ रहेंगे जो
आपसे प्रेम करता है और आपको वहाँ ले जाना चाहता है।

परमेश्वर के साथ-साथ चलें वह आपको स्वर्ग को ले जाएगा।

आपके पापों को दूर करने के लिए परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता को भेज दिया। *वह उद्धारकर्ता परमेश्वर का पुत्र यीशु है। * आप यीशु को नहीं देख सकते परन्तु यीशु वहाँ है। *परमेश्वर के साथ-साथ चलने हेतु या आपकी सहायता करने के लिए आया। * उससे अपने पापों को क्षमा करने की प्रार्थना करें। यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर लें। प्रतिदिन प्रार्थना में परमेश्वर से **बातचीत** करें। बाइबल में जो कुछ परमेश्वर आपसे करने के लिए कहता है उसे करें। यही है परमेश्वर के साथ-साथ चलने का मार्ग (तरीका)। वह आपको स्वर्ग में ले जाएगा।

इस प्रार्थना को सीख लें :

यीशु, मेरे दिल में आ और मेरा उद्धारकर्ता बन।
कृपा करके मेरे पापों को मुझसे दूर कर, जिससे कि मैं स्वर्ग में जा सकूँ। प्रतिदिन परमेश्वर के साथ-साथ चलने में मेरी सहायता करें।

पाठ-7

परमेश्वर आपको बचाएगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर प्रत्येक बुरी बातों से छुटकारा देता है।
परमेश्वर लोगों को बचाना चाहता है।
जितने परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं वह उन सबको बचाता और उनका उद्धार करता है। परमेश्वर आपको भी बचाएगा।

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें
इसे पांच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"परमेश्वर ने नूह से कहा.....एक जहाज़ बना ले.....मैं आप पृथ्वी पर जल प्रलय करके सब प्राणियों का नाश करने पर हूँ, परन्तु तेरे संग मैं वाचा बांधता हूँ कि तुझे तेरे परिवार सहित..... जहाज़ में सुरक्षित रखूँगा।" उत्पत्ति 6:13, 14, 17, 18, 19.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

रिक्त स्थानों में सही अक्षर लिखकर पूरा वाक्य बनाएँ।

1. परमेश्वर उन सबको ब.....है जो उसकी आ.....मानते हैं।
2. परमेश्वर ने नूह से कहा कि एक ज.....बना।
3. परमेश्वर प्रत्येक.....बात से छुटकारा देगा।

उत्तर

1. बचाता, आज्ञा 2. जहाज़ 3. बुरी

आपके सीखने के लिए शब्द

नूह ने जो भारी नौका (बड़ी नाव) बनाई थी उसका नाम जहाज़ है। आज्ञा मानना वह है जो कोई आपसे कुछ करने को कहे और आप उसे करें। जल प्रलय का अर्थ है वह जल जिसने समस्त पृथ्वी को ढक लिया था और समस्त प्राणियों का नाश किया।

परमेश्वर प्रत्येक बुरी बात से छुटकारा देता है। *चिन्ह* के सब शब्दों को रेखांकित करें। जब आप अच्छे आलुओं में सड़े आलू पाते हैं तब आप क्या करेंगे। आप सड़े आलुओं को निकाल कर फेंक देंगे और अच्छे आलुओं को बचा लेंगे। यदि आप ऐसा नहीं करते तो सड़े आलू अच्छे आलुओं को भी खराब कर देंगे।

एक बार परमेश्वर को भी ऐसा ही करना पड़ा।

इसके पहिले कि समस्त संसार बुरा हो जाता परमेश्वर को अपने संसार (सम्पूर्ण जगत) को शुद्ध करना पड़ा। उसे सब तरह के झगड़ों, मार-पीट, हत्या से छुटकारा देना पड़ा। झूठ बोलना, धोखा देना, गालियाँ बकना और अन्य प्रकार के पापों से भी। *परमेश्वर एक नया, शुद्ध किया हुआ संसार चाहता था।* उसमें जितने भी लोग हों सब अच्छे (भले) हों।

परमेश्वर लोगों को बचाना चाहता है

हनोक के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के बाद लोग और अधिक दुष्ट होते गये। वे हर समय बुरे गन्दे काम किया करते थे। समस्त संसार में केवल नूह और उसका परिवार ही अच्छे (धर्मी) जन बचे थे। *परमेश्वर ने नूह को अपना सहायक (प्रचारक) बनाया।* परमेश्वर ने नूह स कहा, "एक जहाज़ बना। मैं जल प्रलय भेजने पर हूँ उस जहाज़ के लोग (जन) बच जाएंगे।" परमेश्वर ने लोगों से प्रेम किया और वह उनको बचाना चाहता था।

जल पलय के बारे में लागों को बताने के लिए उसके पास नूह था। नूह ने उनको जो कुछ बताया उस पर केवल नूह के परिवार ने विश्वास किया। नूह की पत्नी और उसके तीनों पुत्र और उनकी तीनों पत्नियों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और नूह को जहाज़ बनाने में सहायता दी।

जब नूह जहाज बना रहा था तो लोग उसकी हसी उड़ाते थे। उन्होंने कहा "तू मूख है जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है।" नूह ने लोगों से कहा कि उन्ह भी परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। लाग तो उस पर हसते और हसते जाते थे। जब जहाज बन कर तैयार हो गया तो परमेश्वर न नूह से कहा कि उसमें भोजन सामग्री ले आ। मनुष्यों ने लिए और जानवरों के लिए भिन्न-भिन्न भोजन सामग्री उसमें रखने को कहा। परमेश्वर जानवरों को भी बचाना चाहता था। परमेश्वर ने जो बात उनको करने के लिए कही थी, नूह और उसके परिवार ने वैसा ही किया।

जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं वह उन सबको बचाता है

प्रत्येक स्थान से हर एक जाति के जोड़े-जोड़े से जानवर और पक्षी आए। बड़े-बड़े हाथी जमीन को रौंदते हुए आए। शोर मचाने वाले बन्दर भी हूप-हूप करते हुए आए। बड़े-बड़े पक्षी भी चांव-चांव करते हुए आए। छोटे-छोटे पक्षी उड़ते हुए जहाज़ के अन्दर चले गए। कुत्ते और बिल्ली एक साथ दौड़ते हुए जहाज़ में गए।

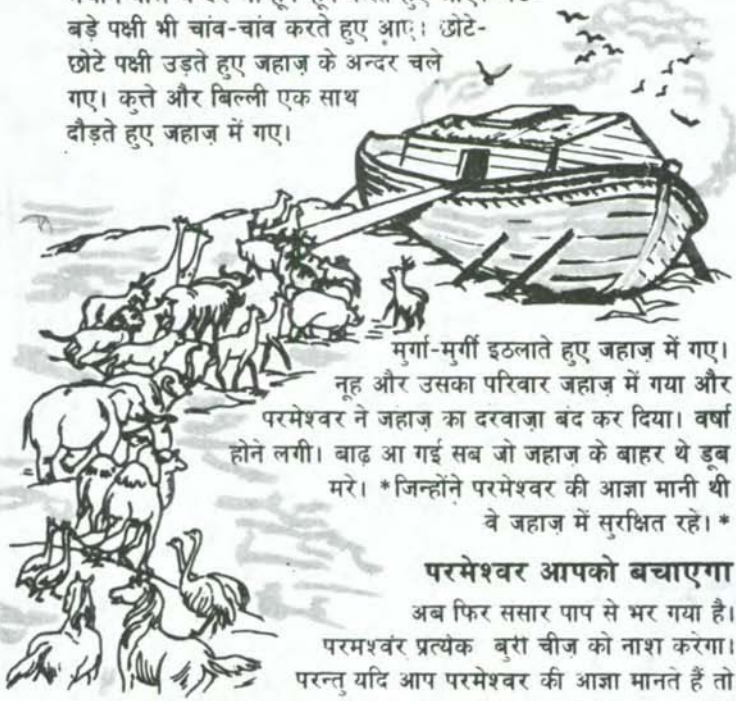

मुर्गा-मुर्गी इठलाते हुए जहाज़ में गए। नूह और उसका परिवार जहाज़ में गया और परमेश्वर ने जहाज़ का दरवाज़ा बंद कर दिया। वर्षा होने लगी। बाढ़ आ गई सब जो जहाज के बाहर थे डूब मरे। *जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी थी वे जहाज़ में सुरक्षित रहे।*

परमेश्वर आपको बचाएगा

अब फिर ससार पाप से भर गया है। परमश्वर प्रत्येक बुरी चीज़ को नाश करेगा। परन्तु यदि आप परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं तो वह आपको बचा लेगा। परमेश्वर से अपने आपको और अपने परिवार को बचान के लिए प्रार्थना करें।

प्रार्थना

कृपा करके मेरे परिवार और मित्रों की सहायता करें। आप पर विश्वास करके पाप से बच जाएँ। उन सबने जिस प्रकार किया उसी प्रकार आज्ञा मानने में हमारी सहायता करें जिन्होंने जहाज़ को देखा और उसमें प्रवेश किया।

पाठ-8

परमेश्वर आपकी चिन्ता करेगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं परमेश्वर उनकी चिन्ता करता है।
जब हम परमेश्वर से कहते हैं: "धन्यवाद" तो वह प्रसन्न होता है।
हम परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए कहते हैं, "आपको धन्यवाद।"

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें

इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

वर्षा चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही।.....और जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया, यहाँ तक कि सारी धरती पर जितने बडे-बड़े पहाड़ थे सब डूब गये। केवल नूह और जितने उसके संग जहाज़ में थे, वे ही बच गए।" उत्पत्ति 7:12, 19. 23. "मैंने बादल में अपना मेघ धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी के बीच का चिन्ह होगा.....। तब ऐसा जल प्रलय फिर न होगा जिससे सब प्राणियों का विनाश हो।" उत्पत्ति 9:13. 15.

क्या आप यह कर सकते हैं?

सही उत्तर वाले शब्दों पर गोला बना दें :

1. कितने दिनों तक वर्षा हुई?	चार	दस	चालीस
2. जहाज़ के बाहर कितने लोग जीवित बच गये?	सब	दस	कोई नहीं
3. परमेश्वर ने नूह को कौन सा चिन्ह दिया?	मेघधनुष		तारागण

उत्तर

1. चालीस 2. कोई नहीं 3. मेघ धनुष

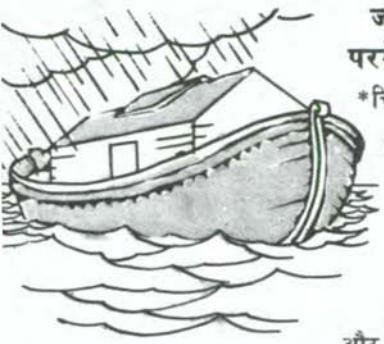

जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं परमेश्वर उनकी चिन्ता करता है।

चिन्ह के सब शब्दों को रेखांकित करें :

जैसे-जैसे बाढ़ का पानी बढ़ने लगा वैसे ही वैसे जहाज ऊपर उठता गया। यह जल ही जल के ऊपर तैरता रहा जिसने पृथ्वी को ढाँप लिया था। *नूह और उसकी पत्नी और उसके तीनों पुत्र और उनकी पत्नियाँ जहाज में सुरक्षित थे।*

जानवर भी सुरक्षित थे। उनके पास खाने को भोजन था। भूसा और चारा, बीज और गिरीदार फल। अनाज और सरस फल। *परमेश्वर और नूह ने जानवरों की सुधि ली।*

चालीस दिन और रात वर्षा हुई। तब परमेश्वर ने पृथ्वी को सुखाने के लिए तीव्र पवन बहाई। धीरे-धीरे पानी घटने लगा। जहाज एक ऊंचे पर्वत की चोटी पर जा टिका और वहीं ठहर गया।

जब तक भूमि सूख न गई नूह और उसका
परिवार जहाज़ में ही रहा।
वे पूरे वर्ष तक जहाज़ में रुके रहे।
*परमेश्वर ने जहाज़ में उनकी सुधि ली। *

अन्त में पृथ्वी सूख गई। नूह ने
जहाज़ का दरवाज़ा खोला।
प्रत्येक जन जहाज़ में से निकल
कर सूर्य के प्रकाश में आ गया,
नूह और उसका परिवार, सब
जानवर और पक्षीगण।

हाथी आनन्द से चिंघाड़ उठे।
बन्दर पहले से भी अधिक ज़ोर से
फुटकटाने (चहकने) लगे।
शेर अपनी पूंछें ऐंठ कर गरजने लगे।
सब ही जहाज़ में से सुरक्षित बाहर निकल
आने के कारण खुश थे।

इसके बारे में सोचिए

क्या आप कभी तूफ़ान में भयभीत हुए या घबराए हैं?
वहाँ आपकी सुधि लेने वाला कौन था?
किसने नूह की, उसके परिवार के जनों और जानवरों को
बचाने में सहायता की थी? आपकी सुधि लेने (चिन्ता करने)
के लिए आपके माता पिता की कौन सहायता करेगा? कौन अनाज,
पेड़-पौधों को बढ़ाता है कि आपको खाने के लिए भोजन
प्राप्त हो? क्या आप अपने भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं?
या तूफ़ानों (मुसीबतों) में आपकी सुधि लेने के लिए?
या प्रतिदिन आपको सुरक्षित रखने के लिए?

परमेश्वर प्रसन्न होता है जब आप कहते हैं: "आपको धन्यवाद"

नूह ने सबसे पहिली बात यह की कि उसने परमेश्वर से कहा "आपको धन्यवाद।" *नूह ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया क्योंकि परमेश्वर ने उसकी उसके परिवार की और सब जानवरों और पक्षियों की चिन्ता (सुधि ली) की थी। * नूह ने साफ़ और नये संसार में रहने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। नूह ने परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए बलि चढ़ाई और कहा "परमेश्वर आपको धन्यवाद"

परमेश्वर प्रसन्न था क्योंकि नूह ने कहा, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" परमेश्वर ने नूह से प्रतिज्ञा की, "अब मैं पृथ्वी को फिर जल प्रलय से नाश न करूँगा।"* मेघ धनुष परमेश्वर की प्रतिज्ञा का चिन्ह है।* जब आप मेघ धनुष देखते है तो स्मरण कर परमेश्वर आपकी चिन्ता करेंगे।।

हम परमेश्वर को यह कहने के लिए भेंट चढ़ाते हैं, 'आपको धन्यवाद'

हम परमेश्वर के घर (भवन) को अपनी भेंट ले जाते हैं। जब आप ईश्वर को धन्यवाद की भेंट देते हैं तब "परमेश्वर आपको धन्यवाद" कहने के लिए इस प्रार्थना को सीख लें:

प्रार्थना

हे परमेश्वर मैं आपका धन्यवाद करता हूँ क्योंकि
हर बात में आप मेरी चिन्ता करते हैं।
घर के लिए, भोजन के लिए और पहिनने के लिए वस्त्रों के लिए।
प्रत्येक बातों के लिए धन्यवाद देने हेतु मैं जो छोटी (थोड़ी)
भेंट लाया हूँ उसे ग्रहण करें।

पाठ-9

परमेश्वर आपकी प्रार्थनाएँ सुनता है

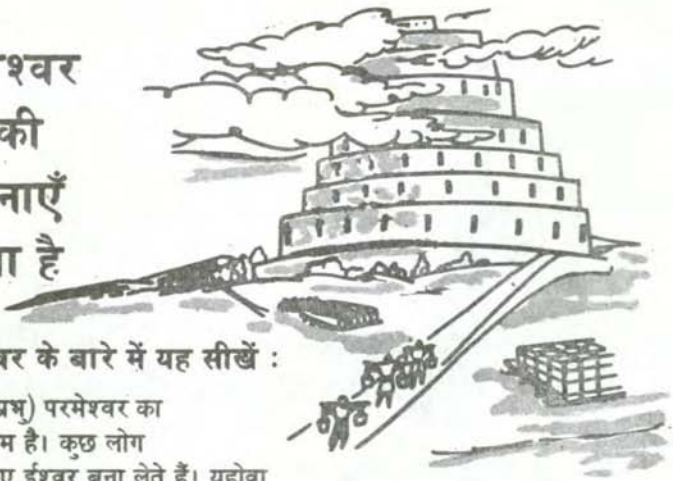

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

यहोवा (प्रभु) परमेश्वर का दूसरा नाम है। कुछ लोग अपने लिए ईश्वर बना लेते हैं। यहोवा ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। परमेश्वर चाहता है कि आप उससे प्रार्थना करें।

अपनी बाइबल में से यह पढ़ें
इसे पांच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :
"यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना" व्यवस्था विवरण 6:4, 5.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

सही उत्तर वाले शब्दों को रेखांकित करें :

1. परमेश्वर चाहता है कि आप किससे प्रार्थना करें ?
   लोगों के द्वारा बनाये गये ईश्वरों से यहोवा परमेश्वर से
2. आप परमेश्वर के प्रति कैसा महसूस करते हैं ?
   उसे प्यार करें उससे भयभीत हों उसे भूल जाएँ
3. परमेश्वर के लिए दूसरा नाम क्या है ?
   महिला यहोवा (प्रभु) अन्जाना व्यक्ति प्राचार्य

उत्तर

1. यहोवा परमेश्वर से 2. उसे प्यार करें 3. यहोवा (प्रभु)

कुछ लोग अपने लिए ईश्वर बना लेते हैं।

चिन्ह के सब शब्दों को रेखांकित करें:
जल प्रलय के पश्चात् नूह के पुत्रों के बहुत से बच्चे हुए, और उनके बहुत नाती पोते हुए।
पृथ्वी पर फिर से बहुत बड़ी संख्या में लोग हो गये थे।

नूह और उसके पुत्रों ने लोगों को परमेश्वर के बारे में बताया।
परन्तु लोगों ने नूह के समान परमेश्वर से प्रेम नहीं किया।
वे तो सब के सब मनमानी करना चाहते थे।
वे न तो अपने माता-पिता, न अपने दादा-दादी (पूर्वजों) और न ही परमेश्वर की बात सुनना चाहते थे।

निर्मोद नामक मनुष्य ने स्वयं को राजा बनाया। वह चाहता था कि लोग उसकी आज्ञा मानें— न की परमेश्वर की
निर्मोद ने लोगों को परमेश्वर से दूर कर दिया।
उसने लोगों को सूर्य और चन्द्रमा की पूजा करना सिखाया और उन्हें अपने लिए बहुत से ईश्वर (देवतागण) बनाना भी सिखाया।

लोगों ने नगर बसाने, और एक ऊंची मीनार (गुम्बद) बनाने के लिए ईंटें बनाई।
परमेश्वर ने स्वर्ग से देखा कि लोग क्या कर रहे थे। उसे मालूम था कि लोग ग़लत काम कर रहे हैं।

परमेश्वर ने कुछ समय के लिए उन्हें उन्हीं के भरोसे पर छोड़ दिया। *तब परमेश्वर ने उन्हें रोका। * परमेश्वर ने दूसरी बार जल प्रलय नहीं भेजा।* उसने लोगों (मनुष्यों) की भाषा में गड़बड़ी डाल दी और लोग भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलने लगे। लोग आपस में एक दूसरे की बोली नहीं समझ सकते थे। वे एक दूसरे की भाषा (बात) नहीं समझ सकते थे। वे एक साथ काम भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने ऊंची मीनार का निर्माण (बनाना) रोक दिया। उन्होंने उस स्थान का नाम बाबुल रखा। बाबुल का अर्थ है "गड़बड़"।

लोगों ने निर्मोद और बाबुल दोनों को छोड़ दिया। वे प्रत्येक दिशा में चले गए। परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहा करते थे। उन्होंने अपने लिए नगर बनाए (बसाए)।
वे एक सच्चे परमेश्वर को भूल गए थे

*जहाँ कहीं भी लोग रहने को गए वहाँ उन्होंने अपने लिए देवता बना लिए। * बड़े-बड़े देवता और छोटी-छोटी मूर्तियाँ, पत्थर और लकड़ी के देवता व मूर्तियाँ। *जो देवता (मूर्तियाँ) उन्होंने अपने हाथों से बनाई थीं उन्हीं की पूजा (उपासना) की। *

यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है।

जो देवी देवता (मूर्तियाँ) लोगों ने बनाए थे वे सुन नहीं सकते थे। जो देवी देवता उन्होंने बनाये थे वे बोल नहीं सकते थे। न ही वे देख सकते थे। जैसा कि सच्चे परमेश्वर ने लोगों से प्रेम किया वैसा ये देवतागण नहीं कर सकते थे। वे न तो वास्तविक और न ही सच्चे ईश्वर (देवतागण) थे।

यहोवा ही केवल सच्चा परमेश्वर है। वह सुनता है, बोलता है और देखता है। लोग तो सच्चे परमेश्वर को भूल गये थे। और उन्होंने सच्चे परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ दिया था परन्तु परमेश्वर उन्हें नहीं भूला था। परमेश्वर तो अभी भी उनसे प्रेम करता है और उनकी सहायता करना चाहता है।

परमेश्वर आपकी प्रार्थनाएँ सुनता है।

आप एकमात्र सच्चे परमेश्वर को देख तो नहीं सकते, परन्तु वह आपके बहुत निकट आपके साथ है। जब आप सच्चे परमेश्वर से बातचीत करते हैं तो वह आपकी सुनता है। परमेश्वर चाहता है कि आप उससे बात करें परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और वह आपकी सहायता करना चाहता है। आपको जो चाहिए वह परेश्वर से माँगें।*

*परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुनेगा और आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। *

इस प्रार्थना को सीख लें

प्रिय परमेश्वर, आप मुझे देखते हैं, मेरी सुनते हैं और मुझसे प्यार करते हैं, क्योंकि केवल आप ही सच्चे परमेश्वर हैं। आप हमेशा मेरे पास हैं। मैं, हे प्रभु केवल आप ही से प्रार्थना करूँगा और उन देवी देवताओं से प्रार्थना नहीं करूंगा जो मुझे कभी प्यार नहीं कर सकते, न मुझे देख ही सकते हैं और न ही मेरी बातें सुन सकते हैं।

पाठ-10

परमेश्वर आपकी अगुवाई करेगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर ने अब्राम को अपने पीछे हो लेने (चलने) के लिए बुलाया। परमेश्वर उनकी अगुवाई (मार्गदर्शन) करता और उन्हें आशीष देता है। जो उसके पीछे चलते (हो लेते) हैं। परमेश्वर आपकी अगुवाई (मार्गदर्शन) अपनी बाइबल से करता है।

अपनी बाइबल में से यह पढ़ें
इसे पांच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"अब्राम के पिता की मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर ने अब्राम से कहा, 'उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा यदि तू ऐसा करे, तो मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू आशीष का मूल होगा।'" उत्पत्ति 12: 1, 2.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

सही उत्तर वाले शब्दों पर गोला बना दें :

1. परमेश्वर ने किसको आशीष देने की प्रतिज्ञा की ?
   अब्राम निर्मोद कैन
2. अब्राम को किसका पिता बनना था ?
   एक छोटी जाति का एक बड़े देश का एक परिवार का
3. आपकी अगुवाई करने के लिए परमेश्वर क्या प्रयोग में लाता है ?
   तारागण बाइबल

उत्तर

1. अब्राम 2. एक बड़े देश का 3. बाइबल

आपके सीखने के लिए शब्द

ऊर वह नगर है जहाँ अब्राम रहता था। कनान वह देश है जिसमें परमेश्वर अब्राम को ले गया।

अब्राम को परमेश्वर ने अपने पीछे चलने के लिए बुलाया

चिन्ह के सब शब्दों को रेखांकित करें।

कुछ घरानों (परिवारों) ने, जिन्होंने बाबुल को छोड़ दिया था ऊर नगर को बनाया। अब्राम का जन्म ऊर में हुआ था। अब्राम का पिता बहुत से देवी-देवताओं की उपासना किया करता था। अब्राम के घराने (कुटुम्ब) के लोगों ने भी अनेक देवताओं की उपासना की। ऐसे देवी-देवताओं की जो न तो देख सकते थे न ही सुन सकते थे। वे एकमात्र सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते थे। *उनके पास न ही बाइबल थी जो उन्हें एकमात्र सच्चे परमेश्वर के बारे में बताती।*

अब्राम सच्चे परमेश्वर को नहीं जानता था। परन्तु परमेश्वर अब्राम को जानता था और उसने उससे प्रेम किया। परमेश्वर ने अब्राम को बुलाया और उससे कहा : "अपने घर और अपने देश को छोड़। अपने पिता के देवी-देवताओं को छोड़ दे। *मेरे पीछे हो ले* और उस देश को चल जो मैं तुझे दिखाऊँगा।"

जो परमेश्वर के पीछे हो लेते हैं वह इनकी अगुवाई करता और उन्हें आशीष देता है

परमेश्वर ने अब्राम से प्रतिज्ञा की, "यदि तू मेरे पीछे चले, तो मैं तुझे आशीष दूंगा और तुझे महान् करूँगा। मैं तुझे महान देश का पिता बनाऊंगा। मैं तुझे आशीष दूँगा और तू आशीष का मूल (स्रोत) होगा।"

अब्राम जानता था कि उसे एक मात्र सच्चे परमेश्वर ने बुलाया है।

जो कुछ परमेश्वर ने कहा था, अब्राम ने उस पर विश्वास किया।

अब्राम की पत्नी सारै ने भी परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया।

अब्राम और सारै ने ऊर नगर को छोड़ दिया।

उन्होंने उन देवी देवताओं को छोड़ दिया जो लोगों ने बनाये थे।

वे एकमात्र सच्चे परमेश्वर के पीछे हो लिए।

अब्राम और परमेश्वर आपस में अच्छे मित्र थे। अब्राम परमेश्वर से बातचीत किया करता था। परमेश्वर अब्राम से बातचीत करता था। परमेश्वर अब्राम के साथ-साथ चला और उसे या कि किस मार्ग पर जाना है।

मेश्वर अब्राम को कनान देश में ले गया।*

जहाँ कहीं अब्राम और सारै रह, अब्राम ने परमेश्वर के लिए वेदी बनाई। जिस प्रकार हाबिल, हनोक और नूह ने किया था। अब्राम ने भी परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाई। अब्राम बहुत लोगों के लिए आशीष का कारण और सहायक था। उसने उन लोगों को सच्चे और जीवित परमेश्वर के बारे में बताया।

परमेश्वर जो प्रतिज्ञा करता है उसे सदैव पूरा भी करता है। परमेश्वर ने अब्राम को आशीष दी और उसे धनवान बना दिया। परन्तु अब्राम बूढ़ा हो गया था और उसके पास कोई सन्तान (बच्चा) नहीं था। फिर भी उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया।और परमेश्वर प्रसन्न था क्योंकि अब्राम ने उस पर विश्वास किया। परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदल कर इब्राहीम रख दिया। इब्राहीम का अर्थ है, "बहुतों का पिता।" परमेश्वर ने सारै का नाम बदल कर सारा रख दिया। सारा का अर्थ है "राजकुमारों की माता।" परमेश्वर ने इब्राहीम और सारा को एक पुत्र दिया जिसका नाम इसहाक था। और उससे एक महान् देश बना।

परमेश्वर अपनी पुस्तक बाइबल से अगुवाई करता है

बाइबल में परमेश्वर कहता है कि मेरे पीछे हो लो। वह आपकी अगुवाई करने आपको आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है। वह आपको बताता है कि क्या करना है। *परमेश्वर के पीछे हो लें और वह स्वर्ग जाने में आपकी अगुवाई करेगा।* कोई बात नहीं यदि आपको कुछ भी छोड़ना क्यों न पड़े, परमेश्वर के पीछे हो लें, जैसा कि अब्राम ने किया। परमेश्वर आपकी सहायता करेगा और दिखाएगा कि आपको क्या करना है।

प्रार्थना

हे परमेश्वर, इब्राहीम अपने देश और अपने मित्रों को छोड़कर आपके पीछे हो लिया और अपने सारे जीवन भर आपके संग-संग चला। मैं भी आपके पीछे हो लेता हूँ। मैं भी आपकी निकट संगति में बने रहकर आपके संग-संग चलूंगा और अपने सब कामों में आपको प्रसन्न करूंगा।

पाठ-11

आपको बचाने के लिए परमेश्वर ने अपना मेम्ना भेजा

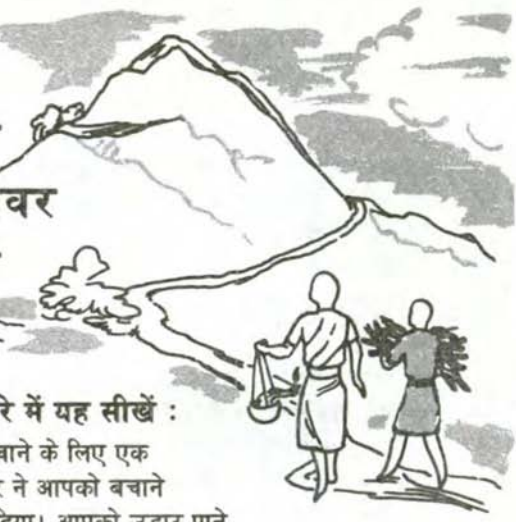

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर ने इसहाक को बचाने के लिए एक मेम्ना भेज दिया। परमेश्वर ने आपको बचाने के लिए अपना मेम्ना भेज दिया। आपको उद्धार पाने (बचाए जाने) के लिए परमेश्वर के मेम्ने को ग्रहण करना है।

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें

इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"इसहाक ने कहा.....देख, आग और लकड़ी है; परन्तु होमबलि के लिए भेड़ कहाँ है?" इब्राहीम ने कहा."हे मेरे पुत्र,परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।" उत्पत्ति 22:7,8. "दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" यूहन्ना 1:29.

क्या आप यह कर सकते हैं?

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखें।

1. "भेड़ कहाँ है," यह किसने कहा? .....
2. "परमेश्वर भेड़ का उपाय आप करेगा। यह किसने कहा? .....
3. "यह परमेश्वर का मेम्ना है" यह किसने कहा? .....

उत्तर

1. इसहाक ने कहा, "भेड़ कहाँ है।"
2. इब्राहीम ने कहा, "परमेश्वर भेड़ का उपाय आप करेगा।"
3. यूहन्ना ने कहा, "यह परमेश्वर का मेम्ना है।"

शब्द जिन्हें आपको जानना चाहिए

पाप के लिए बलिदान का अर्थ है पशु या व्यक्ति जो कि व्यक्ति द्वारा किये गये पाप-अपराध के दण्ड को अपने ऊपर ले लेता है।

होमबलि वह बलिदान है जिसमें बलि को मारा जाकर वेदी पर जला दिया जाता है।

वेदी वह स्थान है जिस पर बलि का बलिदान चढ़ाया जाता है। पत्थरों का ढेर लगाकर बहुत सी वेदियाँ बनाई गई थीं।

इसहाक को बचाने के लिए परमेश्वर ने एक मेम्ना भेजा

चिन्ह के सब शब्दों को रेखांकित करें:

एक दिन परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा: "अपने पुत्र को ले जा। पर्वत पर जा। इसहाक को मेरे लिए बलि चढ़ा।"

इब्राहीम नहीं जानता था कि परमेश्वर न क्यों उसे ऐसा करने के लिए कहा। इब्राहीम नहीं जानता था कि परमेश्वर उसके प्रेम की परीक्षा कर रहा था। और परमेश्वर इब्राहीम और इसहाक को कुछ सिखाना चाहता था। *परमेश्वर हमें भी पाप के लिए अपने बलिदान के विषय में सिखाना चाहता है।*

इब्राहीम दुखित मन लेकर पवत पर गया। इब्राहीम इसहाक को प्यार करता था। परन्तु इब्राहीम तो परमेश्वर की आज्ञा मान रहा था। इसहाक ने लकड़ियाँ ले चलने में सहायता की।

इब्राहीम दुःखी होकर पर्वत पर चढ़ने लगा। इब्राहीम, इसहाक से प्रेम करता था। परन्तु इब्राहीम तो परमेश्वर की आज्ञा मानकर जा रहा था। इसहाक ने लकड़ियाँ ले जाने में सहायता की। इसहाक ने पूछा, "होमबलि चढ़ाने के लिए मेम्ना कहाँ है?" इब्राहीम ने उत्तर दिया, "परमेश्वर स्वयं मेम्ने का प्रबन्ध करेगा।"

इब्राहीम और इसहाक ने एक वेदी बनाई। इब्राहीम ने इसहाक को वेदी पर लिटा दिया। इसहाक तो अब मरने ही वाला था।

परन्तु परमेश्वर इसहाक से भी प्रेम करता था।
परमेश्वर नहीं चाहता था कि इसहाक मर जाए।
परमेश्वर के पास एक और बलिदान था जो इसहाक के स्थान पर मर सकता था।
इब्राहीम ने इसहाक को बलि करने के लिए चाकू ऊपर उठाया।
परन्तु ठीक उसी समय परमेश्वर ने स्वर्ग में से इब्राहीम को पुकारा
"इब्राहीम! ठहर! अपने पुत्र को
मत मार! अब तू मुझसे प्रेम करता है।"

तब परमेश्वर ने इब्राहीम को कंटीली झाड़ी में फंसी एक भेड़ दिखाई। इसहाक का स्थान लेने के लिए ही परमेश्वर ने इस भेड़ का प्रबन्ध किया था उस वेदी पर वह भेड़ मारी गई। इसहाक स्वतंत्र था और अब वह जी सकता था।

आपको बचाने के लिए परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेज दिया।

जो लोग पाप करते हैं स्वर्ग को नहीं जा सकते। जब वे मर जाते हैं तो वे नरक को जाते हैं—जो एक भयानक स्थान है। परन्तु परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया और हमें स्वर्ग में ले जाना चाहता है। परमेश्वर ने हमारी जगह

मरने के लिए अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को भेज दिया, ठीक जैसे कि उसने इसहाक के स्थान पर मरने के लिए एक भेड़ को भेज दिया था। *यीशु परमेश्वर का मेम्ना है जो इसलिए मरा कि जगत के पाप उठा ले जाये।* बाद में वह फिर जीवित हो उठा। आप यीशु को देख तो नहीं सकते, परन्तु वह ठीक आपके पास है। यीशु आपसे प्रेम करता है और आपकी सहायता करना चाहता है।

उद्धार पाने के लिए परमेश्वर के पुत्र को अवश्य ही ग्रहण कीजिए।

अब आपको बलि वेदी पर चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।
आपको केवल इतना करना है कि अपने लिए बलिदान के रूप में परमेश्वर के पुत्र को ग्रहण करना है।
यीशु आपका उद्धारकर्ता होगा—एक वह जो बचाता है।
यीशु आपके पाप आपसे दूर करेगा।
यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लें। तब आप स्वर्ग में जा सकते हैं।
इस प्रार्थना को करें। तब अपने शब्दों
में परमेश्वर से बातचीत करें :

प्रार्थना
हे परमेश्वर—अब मैं आपके पुत्र को ग्रहण करता हूँ जो
मेरे लिए मरा— मेरे पाप दूर कर देने के लिए एक बलिदान बना।
यीशु क साथ जो मेरा उद्धारकर्ता है।
अब मैं स्वतंत्र हूँ।
आज मुझे बचाने, उद्धार देने के लिए मैं आपका
धन्यवाद करता हूँ।

पाठ-12

परमेश्वर आपको क्षमा करेगा और आपकी सहायता करेगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर की आशीष भोजन से उत्तम है।
परमेश्वर याकूब को क्षमा करता और उसे आशीष देता है।
परमेश्वर ने स्वर्ग जाने के लिए आपके लिए एक मार्ग तैयार किया है।
"मैं क्षमा चाहता हूँ," यह कहने में परमेश्वर आपकी सहायता करेगा।

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें

इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"मैं यहोवा परमेश्वर हूँ–मैं तेरे संग रहूंगा और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूंगा।" उत्पत्ति 28:13, 15. यीशु ने उससे कहा, "मार्ग मैं हूँ।" यूहन्ना 14:6.

क्या आप यह कर सकते हैं ?

नीचे दिये गये प्रश्नों में से कुछ प्रश्न पिछले पाठों के हैं। आप जितने प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं दीजिए :

1. कौन मरे बिना स्वर्ग पर गया ? .....
2. जहाज़ किसने बनाया था ? .....
3. किसने अपने भाई की हत्या की थी ? .....
4. भोजन से क्या उत्तम है ? .....

उत्तर

1. हनोक 2. नूह 3. कैन 4. परमेश्वर की आशीष

परमेश्वर की आशीष भोजन से उत्तम है

चिन्ह के प्रत्येक शब्द को रेखांकित करें :

इसहाक की पत्नी रिबका थी।
इसहाक और रिबका परमेश्वर से प्रेम करते थे।
परमेश्वर ने उन्हें जुड़वाँ बच्चे दिए : एसाव और याकूब।

एसाव एक शिकारी था।
एसाव का जन्म याकूब से पहिले हुआ था। *यह उसका अधिकार था कि वह परमेश्वर से विशेष आशीष प्राप्त करे।*
यह पहिलौठे पुत्र का जन्मसिद्ध अधिकार था।
परन्तु एसाव को परमेश्वर से प्राप्त होने वाली आशीषों से अधिक भोजन प्रिय था। एसाव ने परमेश्वर से प्रेम नहीं किया।
उसने तो अपने आप से प्रेम किया।
एसाव ने एक कटोरा मसूर की दाल पाने हेतु अपना जन्मसिद्ध अधिकार याकूब को बेच दिया।
बाद में एसाव पछताया कि उसने परमेश्वर से प्राप्त होने वाली आशीषों को बेच दिया था।
चाहे कितना अधिक भोजन क्यों न हो परन्तु परमेश्वर की आशीष इन सबसे उत्तम है।

परमेश्वर याकूब को क्षमा करता है और उसे आशीष देता है।

याकूब ने अपने परिवार के साथ कुछ बुरी बातें की थीं।
उसने अपने पिता से झूठ बोला और अपने भाई को धोखा दिया।
उसने एसाव का जन्मसिद्ध अधिकार खरीद लिया और उसकी आशीषों को चुराया।

*परन्तु जो भी हो परमेश्वर ने
याकूब से प्रेम किया।*
एसाव याकूब को मार डालना
चाहता था। याकूब को एसाव से बचने
के लिए अपना घर छोड़कर दूर देश
को जाना पड़ा।
मार्ग में परमेश्वर ने एक स्वप्न में याकूब से
बातचीत की। याकूब ने एक सीढ़ी देखी जो पृथ्वी
से स्वर्ग तक पहुँचती थी।
परमेश्वर ने याकूब को आशीष देने की प्रतिज्ञा की।
जब याकूब नींद से जागा तो प्रसन्न था।
परमेश्वर ने उससे अभी भी प्रेम किया।

परमेश्वर उसके कामों के लिए क्षमा कर सकता था जो उसने किए थे।
परमेश्वर उसके संग-संग चल सकता था और सही काम
करने में उसकी सहायता कर सकता था।
*याकूब जानता था कि ऐसा तब होगा यदि वह परमेश्वर के पीछे हो ले,
परमेश्वर किसी न किसी दिन उसे स्वर्ग ले जा सकता था।*

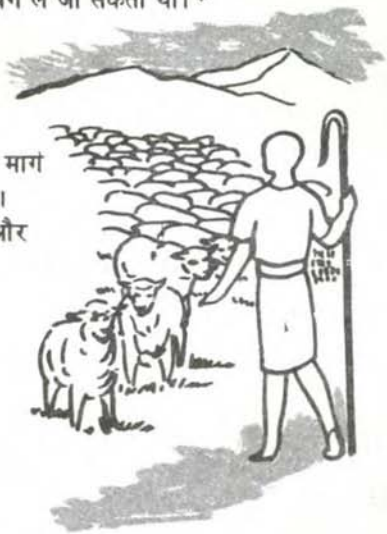

*स्वर्ग में जाने के लिए परमेश्वर
ने आपके लिए एक मार्ग तैयार किया
है।* स्वर्ग जाने के लिए योशु ही वह मार्ग
है। आपको बचाने के लिए यीशु मरा।
अपने जीवन भर यीशु के पीछे चलें और
वह आपको स्वर्ग को ले जाएगा।
*परमेश्वर ने याकूब की चिन्ता
की (सुधि ली)।*
याकूब चरवाहा (भेड़ चराने वाला)
बन गया।
उसके पास बहुत सारी
भेड़-बकरियाँ थीं।
परमेश्वर ने याकूब को एक
परिवार भी दिया।

"मैं क्षमा चाहता हूँ," यह कहने में परमेश्वर याकूब की सहायता करता है।

अन्त में परमेश्वर ने याकूब से वापस घर जाने को कहा। परन्तु एसाव अब भी याकूब को मार डालना चाहता था। एसाव 400 पुरुषों को लेकर याकूब से मिलने को चल पड़ा। याकूब ने जो कुछ एसाव के साथ किया था उसके लिए वह पछताया।

याकूब चाहता था कि उसका भाई उसे क्षमा कर दे। *सहायता पाने के लिए याकूब ने परमेश्वर से प्रार्थना की।* परमेश्वर ने याकूब को क्षमा कर दिया और उसे इस्राएल नाम दिया। *परमेश्वर ने याकूब की सहायता की कि वह एसाव को दिखा सके कि वह अपने किये पर पछताया है।* परमेश्वर ने एसाव की सहातया की कि वह याकूब को क्षमा कर दे तब फिर से दोनों भाई अच्छे मित्र बन गये।

"मैं क्षमा चाहता हूँ," यह कहने में परमेश्वर आपकी सहायता करेगा। क्यों कि आप बुरे थे इसके लिए क्या कभी आप दुखित हुए? हो सकता है आपने किसी के साथ बुरा व्यवहार किया हो। आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको क्षमा करे और आशीष दे। आपको परमेश्वर से कहना चाहिए कि मैं क्षमा चाहता हूँ। परन्तु जिस जन के साथ बुरा व्यवहार किया और उसे दु:ख पहुँचाया, उससे भी कहना चाहिए "मैं क्षमा चाहता हूँ।"

परमेश्वर आपको क्षमा करेगा और आपकी सहायता करेगा। वह आपकी सहायता करेगा कि आप दूसरों के फिर से मित्र बन सकें।

इस प्रार्थना को याद कर लें :
हे प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि दूसरों के साथ मैंने जो बुरा व्यवहार और ग़ल्तियाँ की हैं उन सबके लिए क्षमा करें। मेरी सहायता करें कि मैं उनसे यह कह सकूं "मैं क्षमा चाहता हूँ।" आज हमें फिर से मित्र बना दें।

पाठ-13

परमेश्वर आपके साथ होगा

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

कुछ लोग उन लोगों को दुःख (नुकसान) पहुँचाने की कोशिश करते हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। आप जहाँ भी हैं वहाँ परमेश्वर आपके साथ होगा। आपकी भलाई के लिए परमेश्वर सब कुछ करेगा। जिन्होंने आपको दुःख पहुँचाया है उनको क्षमा करने में परमेश्वर आपकी सहायता करेगा।

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें

इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"यूसुफ के स्वामी ने उसको पकड़कर बन्दीगृह में डलवा दिया– पर यहोवा यूसुफ के संग-संग रहा।" उत्पत्ति 39:20, 21 यूसुफ ने कहा– "यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उस बात में भलाई का विचार किया।" उत्पत्ति 50:19, 20

क्या आप यह कर सकते हैं ?

सही उत्तर वाले शब्द पर गोला बना दें।

1. किसे बंदीगृह में डाल दिया गया था ? इसहाक यूसुफ याकूब
2. बंदीगृह में उसके साथ कौन था ? याकूब इसहाक परमेश्वर
3. जिन लोगों ने आपको दुःख पहुँचाया है उनके लिए परमेश्वर किस प्रकार की सहायता करेगा ? क्षमा करेगा दुःख पहुँचाएगा
4. कौन आपकी भलाई के लिए सब कुछ करेगा ? आप परमेश्वर

उत्तर

1. यूसुफ 2. परमेश्वर 3. क्षमा करेगा 4. परमेश्वर

यूसुफ के भाई यूसुफ को दुःख पहुँचाने की कोशिश करते हैं।

चिन्ह वाले सब शब्दों को रेखांकित करें।

याकूब के बारह पुत्रों में से यूसुफ एक था। याकूब यूसुफ को प्यार करता था। उसने यूसुफ को एक सुन्दर सा कोट दिया। इससे उसके भाई ईर्ष्या से भर उठे। उन्होंने यूसुफ से घृणा की।

परमेश्वर ने यूसुफ से प्रेम किया और उससे बात-चीत की। *परमेश्वर ने उसे स्वप्नों में दिखाया कि वह एक बड़ा शासनकर्त्ता होगा। *

परमेश्वर

*परमेश्वर ने जो कुछ याकूब से कहा उस पर उसने विश्वास किया। * उसने जो स्वप्न देखे थे उन्हें अपने भाईयों को बताया। इसके कारण उसके भाई उससे और अधिक ईर्ष्या करने लगे।

यूसुफ के भाइयों ने उसे मार डालने की योजना बनाई। उन्होंने उसे एक सूखे कुएँ में डाल दिया। इतना ही नहीं उन्होंने उसे एक गुलाम के रूप में बेच दिया। तब उन्होंने अपने पिता याकूब को विश्वास दिला दिया कि एक जंगली जानवर ने यूसुफ को मार डाला।

परमेश्वर याकूब के साथ है

जिन लोगों ने यूसुफ को खरीद लिया था वे उसे दूर देश को ले गये उन्होंने उसे एक गुलाम के रूप में पोतीपर को बेच दिया। *परन्तु पोतीपर के घर में परमेश्वर यूसुफ के साथ था। * परमेश्वर ने उसे प्रत्येक कार्य को ठीक-ठीक करने में सहायता दी। परमेश्वर यूसुफ से प्रसन्न था। इसी तरह पोतीपर से भी।

पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को पाप में गिराने का यत्न किया। यूसुफ ने पाप नहीं किया। उसने परमेश्वर से प्रेम किया। पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ के बारे में झूठ बोला। पोतीपर ने यूसुफ को बंदीगृह में डलवा दिया। *परन्तु अब भी परमेश्वर यूसुफ के साथ था।*

परमेश्वर सब कुछ भलाई के लिए ही करता है।

एक दिन राजा ने यूसुफ को बुलवाया। परमेश्वर ने स्वप्न में राजा से बात की थी। परन्तु राजा उस स्वप्न का अर्थ नहीं समझा था। परमेश्वर ने उस स्वप्न का अर्थ यूसुफ को बताया। सात वर्ष तो अच्छी फसल के थे। तब सात वर्ष अकाल के जिनमें कोई फसल न होगी। यूसुफ ने राजा को स्वप्न का अर्थ बता दिया।

अपने भाईयों को क्षमा करने में परमेश्वर यूसुफ की सहायता करता है।

यूसुफ के भाई अनाज लेने के लिए आये। *परमेश्वर ने यूसुफ की सहायता की कि अपने भाइयों को क्षमा करे जिन्होंने युसूफ के साथ बुरा किया था।*

यूसुफ ने अपने भाइयों को अनाज और रहने के लिए उत्तम स्थान दिया। उसने उनसे प्रेम किया। *परमेश्वर ने सब कुछ भलाई के लिए ही किया है।* आपको चाहे कुछ भी क्यों न हो परमेश्वर से प्यार करना और उससे प्रार्थना करना न छोड़ें। *जो लोग आपको दुःख दें, उन्हें आप क्षमा कर दें।* परमेश्वर सब कुछ भलाई के लिए ही करेगा।

इन पाठों में आपने बहुत सी बातें सीखीं हैं। आपने सीखा है कि परमेश्वर आपको किस तरह प्रेम करता है। आपने सीखा है कि परमेश्वर महान और भला है। परमेश्वर ने आपको बनाया और चाहता है कि आप उसके पुत्र/पुत्री बनें। परमेश्वर भला है और वह चाहता है कि उसके सन्तान (पुत्र/पुत्रियाँ) भी भले बनें। परमेश्वर चाहता है कि आप दूसरों के प्रति दयालु हों।परमेश्वर ने अपना मेम्ना, यीशु को आपके पापों के बदले में मरने के लिए भेज दिया। परमेश्वर आपको क्षमा करना चाहता है और आशीष देना चाहता है। परमेश्वर चाहता है कि आप उसके साथ स्वर्ग में रहें। आप जहाँ कहीं भी क्यों न हों परमेश्वर आपकी सुधि लेगा। परमेश्वर चाहता है कि आप केवल उसी से प्रार्थना करें और अन्य किसी देवता या मूर्ति से नहीं।

परमेश्वर चाहता है कि आप उसके पीछे हो लें। परमेश्वर सदा सच बोलता है। यदि आप परमेश्वर से प्रेम करें और उसकी आज्ञा मानें तो वह आपके लिए सब कुछ ठीक करेगा।जब आप प्रतिदिन परमेश्वर के संग-संग चलते और उससे बातचीत करते हैं, परमेश्वर आपको आशीष देता है।

प्रार्थना

हे परमेश्वर,मैं जानता हूँ कि आप मुझसे बाइबल के द्वारा बात करते हैं। आपने यूसुफ की चिन्ता की। आपने इब्राहीम को आशीष दी। आप आदम और नूह के संग-संग चले और आपने उनसे बातचीत की। आप मुझे प्यार करते हैं। मैं जहाँ कहीं भी हूँ आप मेरे साथ हैं। जैसे कि आपने एक बार याकूब के पाप क्षमा किये थे, ठीक उसी प्रकार आपने मेरे पापों को भी क्षमा किया है। इसहाक के समान आपके मेम्ने की मृत्यु से मैं बच गया हूँ। हनोक के समान ही आप भी मुझे ऊपर स्वर्ग में रहने के लिए ले जाएंगे। मैं आपका पुत्र हूँ। मैं जहाँ कहीं भी रहूँ मैं आपको प्यार करूंगा।

पाठ-14

आप परमेश्वर को और अच्छी तरह से जान सकते हैं

परमेश्वर के बारे में यह सीखें :

परमेश्वर को अच्छी तरह से जानने में बाइबल आपकी सहायता करेगी।
परमेश्वर को अच्छी रीति से जानने में यीशु आपकी सहायता करेगा।
परमेश्वर को भली भांति जानने में परमेश्वर की आत्मा आपकी सहायता करेगा। स्वर्ग में आप परमेश्वर को अच्छी तरह से जान सकेंगे।

इसे अपनी बाइबल में से पढ़ें
इसे पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से पढ़ें :

"परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है कि हम उस सच्चे परमेश्वर को जानें।" 1 यूहन्ना 5-20. "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।" यूहन्ना 3:16

क्या आप यह कर सकते हैं ?

बाएँ दिए गये शब्दों के सभी अर्थ दाएँ शब्दों में ढूंढ़कर आड़ी रेखा खींच दें :

1. परमेश्वर का पुत्र	*	* इसको जानने में सहायता करेगा।
2. परमेश्वर ने प्रेम किया	*	* अनन्त जीवन पाएगा।
3. जो कोई यीशु में विश्वास करेगा	*	* यीशु मसीह।
4. परमेश्वर का आत्मा	*	* जगत से।

उत्तर

1. परमेश्वर का पुत्र	उसको जानने में सहायता करेगा।
2. परमेश्वर ने प्रेम किया	अनन्त जीवन पाएगा।
3. जो कोई यीशु में विश्वास करेगा	यीशु मसीह।
4. परमेश्वर का आत्मा	जगत से।

परमेश्वर को अच्छी तरह से जानने में बाइबल आपकी सहायता करेगी।

बाइबल आपको परमेश्वर के बारे में बहुत सारी बातें सिखाती है। परमेश्वर को अच्छी तरह से जानने के लिए प्रतिदिन बाइबल पढ़ें।
*परमेश्वर अपनी पुस्तक से आपसे बात करेगा। *

परमेश्वर

परमेश्वर को अच्छी तरह से जानने में यीशु आपकी सहायता करेगा।

*परमेश्वर त्रिएक परमेश्वर है अर्थात् एक में तीन व्यक्ति–पिता परमेश्वर, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा। *
यदि इनमें से एक आपके संग है तो तीनों व्यक्ति आपके संग हैं।
यीशु मनुष्य बना कि परमेश्वर को जानने में हमारी सहायता करे। यीशु की माता एक भली स्त्री थी, उसका नाम मरियम था। मरियम के पति का नाम यूसुफ था। परन्तु यूसुफ यीशु का पिता नहीं था। यीशु का पिता तो स्वयं परमेश्वर था।

जब यीशु का जन्म हुआ तो स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की स्तुति की। उन्होंने कुछ चरवाहों से कहा कि एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है। जब चरवाहों ने यीशु को जाकर देखा तो बहुत प्रसन्न हुए। परमेश्वर ने उनका उद्धारकर्त्ता होने के लिए यीशु को भेजा था।
परमेश्वर लोगों के संग रहने के लिए अपने पुत्र के रूप में आया था।

जब यीशु बड़ा हुआ, उसने लोगों को परमेश्वर के बारे में बताया।* उसने उनको दिखाया कि परमेश्वर लोगों के साथ क्या करना चाहता है* उसने अंधों को छूआ और वे देखने लगे। उसने बीमारों को, लंगड़ों, गूंगे-बहिरों को चंगा किया। उसने उदास लोगों को प्रसन्न कर दिया और बुरे लोगों को अच्छा बना दिया।

यहाँ तक कि उसने मुर्दों को जीवित कर दिया। परमेश्वर ने जो कुछ उससे करने को कहा था उसने वह सब कुछ किया।* हमें पाप से छुटकारा देने के लिए यीशु क्रूस पर मरा* वह गाड़ा गया परन्तु फिर से जीवित हो उठा। बाद में उके मित्रों ने यीशु को स्वर्ग पर जाते हुए देखा। *वह उनके लिए फिर से आने वाला है जो उससे प्रेम करते हैं–उन सब के लिए जिन्होंने उसे अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर लिया है।* जो मर गए हैं वे फिर से जीवित हो जाएंगे।
*यीशु हमें अपने साथ स्वर्ग में ले जायेगा। *

परमेश्वर को अच्छी तरह से जानने में परमेश्वर का आत्मा आपकी सहायता करेगा।

परमेश्वर ने अपना आत्मा भेज दिया कि वह उसके लोगों में रहे (वास करे)। पवित्र आत्मा में परमेश्वर आपके संग है। पवित्र आत्मा में यीशु आपके संग है। *प्रार्थना में परमेश्वर से बातें करने में परमेश्वर का आत्मा आपकी सहायता करता है।* परमेश्वर से बातचीत करना, परमेश्वर को जानने में सहायक सिद्ध होगा। *पवित्र आत्मा की मांग करें कि वह आप में आए और आप में रहे।* वह परमेश्वर के लिए जीने और उसे अच्छी तरह से जानने में आपकी सहायता करेगा।

परमेश्वर को जानने में परमेश्वर के लोग आपकी सहायता करेंगे।

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग दूसरों की सहायता करें कि वे भी उसे अच्छी तरह से जान सकें। जो यीशु को जानते हैं वे उसके बारे में दूसरों को बताते हैं। वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन और प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते हैं। वे लोगों को बताते हैं कि परमेश्वर ने उनके साथ कैसे कैसे महान कार्य किए हैं। *परमेश्वर के बारे में और अधिक जानने के लिए उनसे मिलें और उसकी संगति में बने रहें।* *आप जो कुछ परमेश्वर के बारे में जानते हैं उसे अपने मित्रों को भी बतायें जिससे वे भी उद्धार पाकर स्वर्ग में जा सकें।*

स्वर्ग में आप परमेश्वर के बारे में अच्छी तरह से जान सकेंगे।

जब आप स्वर्ग में जाएंगे तब आप परमेश्वर को देखेंगे! उसे आप से बातचीत करते हुए सुनेंगे। आप उन तमाम बातों को जिन्हें अभी नहीं समझते उस समय समझेंगे। आप देखेंगे कि परमेश्वर कितना महान् अद्भुत और सुन्दर है। आप परमेश्वर को अच्छी तरह से जानेंगे और उससे और अधिक प्रेम करेंगे। और फिर आप सदा काल के लिए उसके साथ रहेंगे।

प्रार्थना

हे परमेश्वर आपका धन्यवाद हो, क्योंकि आप मुझे प्यार करते हैं। और एक दिन मैं आपके मुख को देखूंगा। पिता पुत्र और पवित्र आत्मा आकर मेरे दिल (हृदय) में रहें। आपके बारे में अपने मित्रों को बताने में मेरी सहायता करें। मैं प्रार्थना करता हूँ, कि आपको जानने में उनकी भी सहायता करें जिससे कि जब आप एक दिन हमें लेने आएंगे तो वे भी स्वर्ग में जा सकें।

उत्तर पृष्ठ

परमेश्वर आपको प्यार करता है

इन्टरनेशनल कॉरेस्पोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं० 1
एन्ड्रयूज गंज, नई दिल्ली-110 049

(कृपया साफ़ अक्षरों में लिखें)

आपका आई.सी.आई. विद्यार्थी रोल नं. .....

आपका नाम .....

पता .....

.....

राज्य ..... पिन कोड .....

आयु ..... पुरुष/स्त्री ..... व्यवसाय .....

धर्म ..... दिनांक .....

महत्वपूर्ण

यह आपके 'उत्तर-पृष्ठ' हैं। कृपया इन्हें सावधानीपूर्वक खींचकर बाहर निकाल लें और इन्हें भरकर हमें भेज दीजिए। हम इनको जांचेंगे और फिर आपको एक सुन्दर प्रमाण-पत्र भेजेंगे। और इसके द्वारा हम आपका आगामी पाठ्यक्रम में नामांकन भी कर सकेंगे।

एक से अधिक चुनाव

प्रत्येक प्रश्न का एक ही सही उत्तर है सही उत्तर पर - निशान लगाएँ।

1. संसार को किसने बनाया ?
   1) स्वर्गदूत 2) परमेश्वर 3) शैतान
2. संसार की सृष्टि करने में परमेश्वर को कितने दिन लगे ?
   1) दो दिन 2) सात दिन 3) छै दिन

3. प्रथम मानव (मनुष्य) कौन था?
   1) नूह 2) हाबिल 3) आदम
4. बाग (वाटिका) का क्या नाम था?
   1) अदन 2) ऊर 3) कनान
5. किसने आदम और हव्वा को परमेश्वर से अलग कर दिया?
   1) वाटिका 2) फल 3) पाप
6. किसने सर्प की सुनी और पाप किया?
   1) आदम 2) कैन 3) हव्वा
7. किसने अपने भाई की हत्या की?
   1) कैन 2) नूह 3) हाबिल
8. परमेश्वर ने नूह को किससे बचाया?
   1) जलप्रलय 2) आग 3) आंधी
9. वर्षा कितने दिनों तक हुई?
   1) चार 2) दस 3) चालीस
10. परमेश्वर चाहता है कि आप किससे प्रार्थना करें?
    1) लोगों द्वारा बनाए गए ईश्वरों से 2) प्रभु परमेश्वर से
    3) धनी लोगों से
11. निर्मोद कौन था?
    1) मंत्री 2) राजा 3) सभासद
12. परमेश्वर ने किसको आशीष देने की प्रतिज्ञा की?
    1) अब्राम 2) निर्मोद 3) कैन
13. परमेश्वर का मेम्ना कौन था?
    1) यीशु 2) यूहन्ना 3) इसहाक
14. परमेश्वर ने याकूब को क्षमा किया और उसे एक नाम दिया?
    1) इस्राएल 2) एसाव 3) बुद्धिमान
15. कौन आपकी भलाई के लिए सब कुछ करता है?
    1) दार्शनिक 2) भविष्य बताने वाला 3) परमेश्वर

सही या ग़लत

नीचे दिए गए कथन या तो सही हैं या ग़लत। सही उत्तर के सामने (✓) निशान लगा दें।

1. हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया।
   ...अ) सही ....ब) ग़लत

2. पहिले दिन परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा और तारागण बनाए।
...अ) सही ....ब) ग़लत
3. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने स्वरूप में बनाया।
...अ) सही ....ब) ग़लत
4. शैतान प्रयास करता है कि लोग पाप करें।
...अ) सही ....ब) ग़लत
5. जो दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं परमेश्वर उनको दण्ड नहीं देता।
...अ) सही ....ब) ग़लत
6. परमेश्वर ने हनोक को जीवित ही स्वर्ग पर उठा लिया।
...अ) सही ....ब) ग़लत
7. परमेश्वर उन सबको बचाता है जो उसकी आज्ञापालन करते हैं।
...अ) सही ....ब) ग़लत
8. परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार की चिन्ता नहीं की।
...अ) सही ....ब) ग़लत
9. मनुष्यों द्वारा बनाए गए ईश्वर सुन सकते हैं।
...अ) सही ....ब) ग़लत
10. अब्राम का जन्म कनान में हुआ था।
...अ) सही ....ब) ग़लत
11. परमेश्वर ने आपको बचाने (आपका उद्धार करने) के लिए अपने मेम्ने को भेजा।
...अ) सही ....ब) ग़लत
12. याकूब और एसाव इसहाक के पुत्र थे।
...अ) सही ....ब) ग़लत
13. परमेश्वर यूसुफ को भूल गया और वह जेल में ही मर गया।
...अ) सही ....ब) ग़लत
14. जो कोई यीशु में विश्वास करता है उसको अनन्त जीवन मिलेगा।
...अ) सही ....ब) ग़लत
15. परमेश्वर आपको प्यार करता है।
...अ) सही ....ब) ग़लत

यदि "परमेश्वर आपको प्यार करता है" पुस्तक को पढ़कर आपको आनन्द आया है तो कृपया अलग कागज़ पर अपने शब्दों में लिखें कि यह पुस्तक आपको कैसी लगी ?

प्रिय आई.सी.आई. विद्यार्थी,
हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि "परमेश्वर आपको प्यार करता है" आपके लिए एक लाभकारी अध्ययन सिद्ध हुआ।

हो सकता है कि आप के कुछ मित्र या रिश्तेदार हैं जो "परमेश्वर आपको प्यार करता है" पुस्तक का अध्ययन करना चाहते हों।

कृपया अपने मित्रों और रिश्तेदारों के नाम और पते हमें भेज दीजिए। उनके नाम और पते साफ़ अक्षरों में लिखे होना चाहिए। उस भाषा के नीचे रेखा खींच दें जिस भाषा में वे इसका अध्ययन करना चाहते हैं। हमें उनको भी यह पाठ्यक्रम भेजने में अति प्रसन्नता होगी।

धन्यवाद, जब आप आई.सी.आई. के पाठ्यक्रमों का अध्यन करते हैं तो प्रभु आपको बहुतायत से आशीष दे।

नाम .....

पूरा पता .....

..... अंग्रेज़ी/हिन्दी

नाम .....

पूरा पता .....

..... अंग्रेज़ी/हिन्दी

नाम .....

पूरा पता .....

..... अंग्रेज़ी/हिन्दी

नाम .....

पूरा पता .....

..... अंग्रेज़ी/हिन्दी

E0600HN90